100 से ज़ाइद हवालाजा़त पर मुश्तमिल किताब

मौलूदे का'बा सय्यिदिना अ़ली وجهه الله كرم

अइम्मा व मुहद्दिषीन और मुअर्रिख़ीन की नज़र में

तालीफ
दीवान मॉहसिनशाह

रस्मुल खत हिन्दी
डो. शहेज़ादहुसैन क़ाज़ी

नाशिर : इमाम जा'फ़र सादिक़ फाउन्डेशन
(अह्ले सुन्नत)

100 से ज़ाइद हवालाज़ात पर मुश्तमिल किताब

मौलूदे का'बा

सय्यिदिना अ़ली

अइम्मा व मुहद्दिषीन और मुअर्रिख़ीन की नज़र में

: तालीफ :

दीवान मोहसिन शाह

: रस्मुल खत हिन्दी :

डॉ. शेहज़ादहुसैन क़ाज़ी

किताब का नाम : मौलूदे का'बा सय्यिदिना अली

तालीफ : दीवान मोहसिन शाह

तरजुमा रस्मुल ख़त हिन्दी : डो. शेहज़ादहुसैन यासीनमीयां क़ाज़ी

फाउन्डर एन्ड चेरमेन

ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नह),

मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, भारत

सफहात : 88

सन इशाअत : मार्च, 2018 (13 रजब, हिजरी 1440)

कम्पोसिंग/प्रिंटिंग: इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत),

मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, इन्डिया

मिलने का पता

इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन

(अहले सुन्नत)

डो. शेहज़ादहुसैन यासीनमीयां क़ाज़ी

मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, इन्डिया

Contact No : 85110 21786

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِماً أَبَداً

عَلَى النَّبِيِّ وَأَهْلِ الْبَيْتِ كُلِّهِمِ

وَمَنْ هُمُوا آلِ بَيْتٍ جَلَّ فِى الْعِظَمِ

الدِّيْنُ مِنْ بَيْتِهِمْ قَدْ جَاءَ لِلْأُمَمِ

﴿اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ﴾

بسم الله الرحمن الرحيم

अर्ज़े नाशिर

अल्लाह ﷻ के नाम से शुरु कि जो बड़ा महरबान बख़्शनेवाला है, नहीं है कोई मा'बूद सिवा अल्लाह ﷻ के और मुहम्मद ﷺ अल्लाह ﷻ के रसूल हैं । अल्लाह ﷻ का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझ से **"मौलूदे का'बा सय्यिदिना अ़ली"** किताब का हिन्दी लिपियांतर करने का काम लिया ।

एक ऐसा भी वक़्त था जब मुसलमान हुक्मरानों ने मुहिब्बाने अहले बैते अत्हार और खास तोर पर बनू फातिमा पर बडे अर्से तक वो ज़ुल्म किया जो शायद ही किसी नबी की आल पर उस नबी की उम्मत ने किया हो । ज़ुल्म आज भी हो रहा है सिर्फ तरीक़ा बदला है, उस ज़माने में आले मुहम्मद ﷺ को जिस्मानी तक़लीफे दी जाती थी, मिम्बरों पर उलमा को आले मुहम्मद ﷺ को बुरे अल्फाज़ों से याद करने पर मजबूर किया जाता था, मुहद्दिषीन को उनसे रिवायत लेने पर सज़ाए दी जाती थी, कहीं इमामे आज़म अबू हनीफा को इमाम नफ्सुज्ज़किय्या की मुहब्बत की वजह से कैद किया गया, तो कहीं इमाम शाफिई पर शिआ, राफ़ज़ी के फतवें लगा कर उन्हें ज़लील किया गया, कहीं इमाम निसाई को मौला अ़ली की मुहब्बत की वजह से शहीद किया गया तो कही इमाम हाक़िम जैसे मुहद्दिष पर शिआ के फतवे लगाकर उनके मिम्बर को तोड दिया गया । एक ज़माने तक ये चलता रहा मगर अह्ले बैत के ग़ुलाम कभी अम्मार बिन यासिर बनकर मैदाने जंग में आये तो कही अबू ज़र की तरह रीज़ाए इलाही में शहीद हुए । कहीं हबीब इब्न मुजाहिर और हुर्र बनकर करबला में आले मुहम्मद ﷺ पर जान लूटाने आए तो कहीं

इल्म के मैदान में इमाम निसाई رحمۃ اللہ علیہ, इमाम हाकिम رحمۃ اللہ علیہ, इमाम बुख़ारी رحمۃ اللہ علیہ, इमाम अबू हनीफा رحمۃ اللہ علیہ, इमाम शाफीई رحمۃ اللہ علیہ और इमाम अहमद इब्ने हम्बल رحمۃ اللہ علیہ बनकर आए तो कहीं दीन की तब्लीग में ख्वाजा गरीब नवाज़ رحمۃ اللہ علیہ, निज़ामुद्दीन औलिया رحمۃ اللہ علیہ, वारिसे पाक رحمۃ اللہ علیہ, मख्दुम महाइमी رحمۃ اللہ علیہ और मख्दुम जलालुद्दीन जहानियां जहाँगश्त رحمۃ اللہ علیہ बनकर आए । वक्तन फ-वक्तन हर मैदान में ग़ुलामानें अह्ले बैत علیہم السلام नासबिय्यतो खारजिय्यत के मुक़ाबले में आते रहें, अपनी खिदमात देते रहे और अपनी जाने भी कुर्बान करते रहे ।

इस ज़माने में भी नासबिय्यत और खारजियत तमाम फिर्क़ों में अपना सर उठा रही है बल्कि कहुँगा कि उरुज़ पर पहुँच रही है, फर्क़ सिर्फ इतना है कि जो नासबिय्यत की ड़ोर कल सल्तनत के बादशाहों ने अपनी बादशाहत की लालच में संभाली थी और उलमाओ मुहद्दिषीन की गरदनों पर तलवारें रखकर लोगों से फज़ाइले अह्ले बैत علیہم السلام छुपा कर, बुग़्ज़े अह्ले बैत علیہم السلام को आम करवा रहे थे वो ही नासबिय्यत की बागड़ोर आज कल कुछ फिर्क़ापरस्त नाम निहाद पीर, उलमा व कुछ तन्ज़ीमों नें संभाल ली है । कल के उलमा मजबूरी में औलाद व जानो माल के डर से फज़ाइले अह्ले बैत علیہم السلام छुपा रहे थे और उनके बुग़्ज़ में कुछ ने तो मौज़ूअ अहादीष तक घड़नी शुरु कर दी थी, तो आज भी ऐसा ही हो रहा है फर्क़ सिर्फ इतना है कि आज के इस **Democracy** (जम्हूरियत) के ज़माने में उलमा की जान को या मालो औलाद को तो ख़तरा नहीं है मगर दुन्यवी लालच चाहे वो शोहरत पाने की हो या दौलत की हो , या चन्द फित्नापरस्त लोगों को ख़ुश करने के लिए हो, इसी वजह से आज के उलमा की एक जमा'अत फज़ाइले अह्ले बैत علیہم السلام नहीं बता रही है बल्कि अवाम को कुर्आनो अह्ले बैत علیہم السلام से दूर किया जा रहा है । कुर्आन के तर्जुमा व तफ़सीर से उम्मत को दूर किया जा रहा है और मुहब्बते अह्ले बैत علیہم السلام पर

शिआ़, राफ़ज़ी के फतवे लगाये जा रहे है, जबकि मुतवातिर ह़दीषे ग़दीर से रसूलुल्लाह ﷺ का क़ौल साबित है कि नबीय्ये करीम ﷺ ने फ़रमाया :

“मैं जिसका मौला हूँ अ़ली भी उसके मौला हैं”

(अल मुजमुलकबीर, लि-तबरानी)(रावी सिक्का)

मुख़्तसर हदीस :

“हो सकता है कि मुजे़ बुलाया जाए तो मैं क़ुबूल करुं, मैं तुम्हारे दरमियान दो भारी (अज़ीम) चीजें छोड़ कर जा रहा हूँ, इनमें से एक दूसरे से बढ़कर है, एक अल्लाह ﷻ की किताब और दूसरे मेरी इतरत या'नी मेरे अह्ले बैत, तो तुम सोच लो कि इन दोनों के बारे में मेरी कैसी जाँनशीनी करोगे, ये दोनों आपस में जुदा नहीं होंगे ता-आँ कि हौज़ पर आकर मुज़ से मिले ।”

(इमाम निसाई फी ख़साइस अमीरुल मोमिनीन अ़ली बिन अबी तालिब)

अब आप कारेइन को सोचना है कि हमारे नबी ﷺ तो हमें कुर्आन और अह्ले बैत से वाबस्तग़ी का हुक्म दे रहे है और नाम निहाद पीरो उलमा और कुछ तन्ज़ीमों की एक जमा'अत फिर्कापरस्ती फैला कर इनसे अवाम को दूर रखने का काम अन्जाम दे रहे है । आज माहौल ये बनाया जा रहा है कि जो अह्ले बैत से मुहब्बत करे उसे शिआ़, राफ़ज़ी जैसे अल्फाज़ो से नवाज़ा जाता है, बेचारी अवाम को ये तक बताया नहीं जाता की सिर्फ मुहब्बत व फज़ीलते अह्ले बैत से कोई राफ़ज़ी नहीं बनता बल्कि जो सहाबाए किराम की शानमें ला'नो ता'न करता है उसे राफ़ज़ी कहा जाता है । मैं इस बात पर ज़्यादा लिखकर अपनी बात को तवील नहीं करना चाहता जो हक़ था वो बयान करने की कोशिश की है । अल्लाह ﷻ हम सबको नेक हिदायत दे आमीन....

दौरे हाज़ीर में कुछ फिर्कापरस्त और नाम निहाद मौलवीयों ने येह

कहना शुरु किया है के मौला अ़ली ﷺ का 'मौलूदे का'बा' होना रिवायातों से साबित नहीं है, ये घड़ी हुई बाते हैं, शीआ़ और राफ़ज़ीयों की किताबों से बताई हुई बाते है. ता'ज्जुब की बात है के जो रिवायत अहले सुन्नत वल जमाअत के मुफ़स्सिरीन, मुहद्दिषीन, मुअर्रिख़ीन, मुहक़्क़िक़ीन व सीरत निगारों का एक बड़ा गिरोह डंके की चोट़ पे अपनी किताबों में नक़्ल करता है, खबरे मुतवातिर कहता है, जो रिवायत सूरज की तरह रौशन है उसको बेबुनियादी बातों पर क्यूं गलत साबित करने की कोशिश की जा रही है ? ता'ज्जुब तो तब होता है जब ये लोग इमाम हाकि़म رحمۃ اللہ जैसे मुहद्दिष की बात तक मानने से इन्कार कर रहे है जो अह्ले हदीष और अह्ले सुन्नत दोनों मक़ातबे फिक्र में मो'तबर आलिम व मुहद्दिष शुमार किये जाते है, यहां तक कि येह फ़ित्नापरस्त लोग अपनी ज़हालत का यूं मुज़ाहरा करते नज़र आते हैं कि इमाम ज़हबी की किताब "सियरु आ'लामिन्नुबला" में तो "मौलूदे का'बा" पर कोई रिवायत नहीं है अगर ऐसी रिवायत होती तो वोह ज़रुर बयान करते, मगर अफ़सोस कि येह लोग इन्हीं इमाम ज़हबी की दूसरी किताब "अल-तलख़ीस" को नहीं देखते जिस में उन्होंने इमाम हाकिम की "मौलूदे का'बा" वाली बात की ताईद फ़रमाई हैं कि तवातुर के साथ आया है कि मौला अली मौलूदे काबा हैं । मगर अफसोस के बुग्ज़े अ़ली علیہ السلام में कुछ लोगों को ये नज़र नहीं आता ।

वक़्त की ज़रुरत को देखते हुए मुझे इस मौक़िफ पर एक मुतअद्दिद हवालाजात के साथ मो'तबर किताब की ज़रुरत मेहसूस हुई । इसी दौरन ईस मौज़ू' पर मेरी बात मेरे अज़ीज़ दोस्त रिसर्चर व मुहिब्बे अहले बैत दीवान मोहसिन शाह साहिब से हुई जो सय्यिदिना अ़ली ﷺ के "मौलूदे का'बा" होने की क़वी दलाइल व हवालाज़ात के साथे एक किताब तैयार कर रहे थे । दीवान मोहसिन शाह साहबने इस मौज़ू' पर तीन बाब में बेशक़ीमती किताब "मौलूदे का'बा मौला'ए का'एनात

सय्यिदिना अ़ली इब्न अबी तालिब ﷺ" लिखी है जो रोमन उर्दू में बहोत जल्द **Online available** हो जाएगी जिसका पेहला बाब "फज़ाइले अमीरुलमु'मिनीन अ़ली इब्न अबी तालिब ﷺ", दुसरा बाब "मौलूदे का'बा मौलाए काएनात सय्यिदिना अली इब्न अबी तालिब ﷺ" और तीसरा बाब "मौलूदे का'बा" अइम्मा व मुहद्दिषीन और मुअर्रिख़ीन की नज़र में" है ।

दीवान मोहसीनशाह साहब कई सालों से **Social Media** के ज़रिये मुहब्बते अह्ले बैत ﷺ को आम कर रहें है जिसके लिए उनकी वेबसाईट **www.SunniAhlulBayt.wordpress.com** और **www.SawadeAzam.wordpress.com** मशहूर है ।

वक़्त की ज़रुरत और वक़्त की कमी दोनों को मद्देनज़र रखते हुए फिलहाल हमने ये पूरी किताब तबअ़ न करके सिर्फ इसका तीसरा बाब एक रिसाले की शक्ल में पब्लिश करने का फैसला लिया । इन्शाअल्लाह ﷻ बहोत जल्द पूरी किताब को भी पब्लिश करेंगे । लिहाज़ा याद रहे कि येह छोटा सा रिसाला उस मो'तबर किताब का एक बाब है ।

इस किताब में दीवान मोहसिन शाह साहिबने दौरे हाज़िर में खुद को अहले सुन्नत केहलाने वाले तीनों मक़ातिबे फ़िक्र बरेलवी, देवबंदी और अहले हदीष के मो'तबर उलमाए किराम की किताबों के हवालाजात भी पेश किये हैं जिस में उन्होंने मौला अली का "मौलूदे का'बा" होना नक़्ल किया है । यही नहीं बल्कि उन अइम्मा, मुहद्दिसीन, मुअर्रिख़ीन व सीरत निगारों की किताबों से भी रिवायत नक़्ल की हैं जिन्हें सुन्नी, बरेलवी, देवबंदी और अहले हदीष के उलमा भी तस्लीम करते हैं. दौरे हाज़िर में शायद ही कोई ऐसी किताब होगी जिस में ईस तरह से मौलाए काएनात के "मौलूदे का'बा" होने पर कुतुबे अहले सुन्नत से तक़रीबन 106 हवालाजात पेश किये गए हों । ये उन लोगों को जवाब है जो मौला अ़ली ﷺ के मौलूदे का'बा होने पर शक्को शुबहा किया

करते है !

अब उन लोगों को सोचना चाहिए और भोलीभाली अवाम को भी सोचना चाहिए जो अैसे लोगों की बातों में बगैर तेहक़ीके अंधाधूंध यक़िन कर लेती है कि जब अह्ले सुन्नत के उलमाए किराम की एक बडी जमा'अत बगैर कोई शक्क के मौला अ़ली का मौलूदे का'बा होना मानती है तो कहीं आप किसी और राह पर तो नहीं चल पडे ?? शीअ़त और राफ़ज़ीय्यत से बचाने के नाम पर कहीं नासबिय्यत और खारजिय्यत की राह तो नहीं पकड ली ? अल्लाह हम सबको नेक हिदायत अता करे.... आमीन ।

दीवान मोहसीनशाह साहबने जो कारनामा इस किताब को लिखने का अन्जाम दिया है, अल्लाह इसका बदला उनको और उनके घरवालों को अता फ़रमाये । ब-रोज़े क़यामत सय्यिदिना मुहम्मदुर्ररसूलुल्लाह की शफाअत नसीब फ़रमाये और सय्यिदा ज़हराए पाक की चादर का साया नसीब फ़रमाए...आमीन

अल्लाह से दुआ है कि मेरी इस हक़ीर सी काविश को क़ुबूल फ़रमाए और मुजे़ रसूलुल्लाह व अह्ले बैत की शफाअत नसीब फरमाए !

खा़दिमे दरे ज़हराए पाक

डो. शेहज़ादहुसैन यासीनमीयां क़ाज़ी

13 रज्जब, हिजरी 1440

हर्फ़े आग़ाज़

अमीरुलमु'मिनीन सय्यिदिना अ़ली इब्न अबी तालिब की विलादते बा-सआदतैन का'बा मुअ़ज़्ज़मा के अन्दर हुई और येह आप के बे-शुमार फज़ाइल व मनाक़िब और ख़साइस में से एक बड़ी फज़ीलत है, जिसे गैर-मामूली शोहरत हासिल है । नीज़ सय्यिदिना मौला अ़लीयुल मुर्तज़ा की विलादते बा बरकत का का'बा मुअ़ज़्ज़मा में होना शीओ का अकीदा और मनगढ़त रिवायत नहीं बल्कि अहले सुन्नत वल जमा'अत के मुहद्दिषीन व मुअर्रिख़ीन और सीरत-निगारों ने इस बात को तवातुर से बयान किया है और आप की इस इम्तियाज़ी शान को आप के फज़ाइल व मनाक़िब में शुमार किया है ।

ज़ेरे मुताला'अ रिसाला में आप के चन्द एक फज़ाइल व मनाक़िब और ख़साइस बयान करने के बाद मौला'ए का'एनात के मौलूदे का'बा होने पर अहले सुन्नत की मुस्तनद व मो'तबर किताबों के हवालाज़ात पेश किये गये है ।

अल्लाह से दुआ है के वोह हम पर हक़ को रौशन फ़रमाए और उसकी इत्तेबा नसीब फ़रमाए और हमें बातिल से आगाह फ़रमा कर उस से बचने की तौफीक़ अता फरमाए ।

(आमीन-बि-जाहि सय्यिदुल मुर्सलीन ﷺ)

यके अज़ ग़ुलामाने अहले बैत

दीवान मोहसीन शाह

फेहरिस्त

सय्यिदिना मौला अ़ली ﷺ की विलादते बा-बरकत का का'बा मुअ़ज़्ज़मा मे होना अह्ले सुन्नत के अइम्मा, मुहद्दिषीन, मुअर्रिख़ीन, औलियाअल्लाह और सीरत व तज़्किरा निगाहों ने तवातुर से बयान किया है और इसे आप عليه السلام की फज़ीलत व मन्क़बत क़रार दिया है । नीज़ अकाबिर उलमाए अह्ले सुन्नत ने मौला'ए का'एनात सय्यिदिना अ़ली इब्न अबी तालिब عليه السلام के मौलूदे का'बा होने को आप عليه السلام का ख़ुस्सा क़रार दिया है ।

इस किताबचे में मौला अ़ली ﷺ के मौलूदे का'बा होने के तकरीबन 106 हवालाज़ात पेश किये गयें हैं जिसमे खुद को अह्ले सुन्नत केहलानेवाले तीनों गिरोह - बरेल्वी, देवबन्दी व अह्ले हदीष के नामवर उलमा की किताबों के भी हवाले पेश किये गयें हैं ।

1 मुअर्रिख़ अल्लामा मस्ऊदी رحمة الله عليه और मौलूदे का'बा

मु'अर्रिख अबूल हसन अ़ली बिन अल हुसैन बिन अ़ली अल }¢, êè رحمة الله عليه (वफात : सन 346 हिजरी) ख़िलाफते अमीरुलमु'मिनीन सय्यिदिना अ़ली इब्न अबी तालिब के जिक्र में लिखते हैं :

"आप की विदादत खानाए का'बा में हुई ।"

(इब्न हुसैन फी मुरुजल ज़हब-02/273)

नीज़ 'इष्बातुलवसिया' में लिखते हैं : "सय्यिदिना अ़ली से पेहले और बाद में का'बा में किसी की भी पैदाइश नहीं हुई ।"

(इब्न हुसैन फी इष्बातुलवसिया लिल इमाम अ़ली इब्न अबी तालिब, स.-142)

अल्लामा शिब्ली नुमानी मु'अर्रिख मसूदी के बारे में लिखते है के :

"अबूलहसन बिन अ़ली बिन हुसैन मसूदी رحمة الله عليه वफात सन 386 हिजरी फन्ने तारीख़ का इमाम है । इस्लाम में आज तक इस के बराबर कोई वसीउन्नज़र मुअर्रिख पैदा नहीं हुआ । वोह दुनिया की और कोमों की तवारीख़ का भी बहोत बड़ा माहिर था । इस के तमाम तारीख़ी किताबें मिलती तो किसी और तस्नीफ की हाजत न होती । लेकिन अफसोस है के कौम की बद-मज़ाक़ी से अकसर तसानीफ नापइद हो गई ।"

(शिब्ली फी अल-फारुक़ - सफा-27)

2 मुहद्दिष इमाम हाकिम नेशापुरी رحمۃ اللہ علیہ
और
मौलूदे का'बा

इमाम अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हाकिम नेसापुरी رحمۃ اللہ علیہ (वफात : सन 405 हिजरी) 'अल-मुस्तदरक़' में फ़रमाते हैं :

"अख़बारे मुतवातिरा से साबित है के हज़रत फातिमा बिन्ते असद رضی اللہ عنہا ने सय्यिदिना अमीरुलमु'मिनीन अ़ली इब्न अबी तालिब علیہ السلام को जौफे का'बा में जन्म दिया ।"

(हाकीम फी अल-मुस्तदरक अला अल सहीहैन-03/593)

3 हाफीज़ इब्ने मग़ाज़िली رحمۃ اللہ علیہ
और
मौलूदे का'बा

अल हाफ़ीज़ अबूल हसन अ़ली बिन मुहम्मद अल वासिती अल-अमरुफ इब्न अल-मग़ाज़िली رحمۃ اللہ علیہ (वफात : सन 483 हिजरी) अपनी तस्नीफ़ "मनाक़िब अमीरुलमु'मिनीन अ़ली इब्न अबी तालिब" علیہ السلام में रक़म-तराज़ है :

"पस हुज़ूर صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم उन्हें (सय्यिदा फातिमा बिन्ते असद رضی اللہ عنہا को) का'बा मुअज़्ज़मा की तरफ ले गए और का'बा के अन्दर बैठा दिया, फिर फ़रमाया : अल्लाह عزوجل के नाम की बरकत से बैठ जाओ, फ़रमाया : पस वोह अचानक उस तकलीफ से आज़ाद हो गई और उन्होंने एक मसरुर और साफ सुथरे बच्चे को जन्म दिया, ऐसे हसीन चेहरे वाला नहीं देखा गया ।"

(इब्न मग़ाज़िली फी मनाकिब अमीरुलमु'मिनीन अ़ली इब्न अबी तालीब علیہ السلام - सफा-20)

4 शैख फरीदुद्दीन अत्तार عليه الرحمة और मौलूदे का'बा

हज़रत शैख अबू तालिब मुहम्मद बिन अबी बक्र इब्राहीम फरीदुद्दीन अत्तार नेसापूरी رحمة الله عليه (वफात : सन 627 हिजरी) फ़रमाते है :

کیست دانا شہسوار لو کشف
آں کہ پا بنہادہ احمد را کتف
کیست دانا آں کہ در کعبہ بزاد
چشم را بر روئے احمد او کشاد

"कौन ऐसा शेहसवार है, जो दोशे अहमद ﷺ पर सवार हुवा, वोह कौन सी हस्ती है जिस की विलादत का'बा में हुई जिसने आंख खोलते ही हज़रत मुहम्मद ﷺ के रुए अनवर को देखा हो ।"

(खुसरो क़ासिम फी काशकोले मा'रेफत - सफा-33)

5 अबी सालिम नसीबी अश्शाफिई

और

मौलूदे का'बा

शैखुल इमाम अल्लामा अबी सालिम कमालुद्दीन मुहम्मद बिन तल्हा इब्न मुहम्मद अल हसन अल नासीबी अल शाफिई (वफात : सन 652 हिजरी) **"मतालिब अल-सु'ल"** में रक़म फ़रमाते है :

"हज़रत मौला अ़ली खानाए का'बा के अन्दर पैदा हुवे, आप की विलादत नबी पाक की सय्यिदा ख़दीजा से शादी के तीन साल बाद हुई ।"

(अबी सालिम फी मतालिब अल-सु'ल फी मनाकिब आर्रसूल - सफा-63)

6 हाफिज़ किज़ऊ़ली बगदादी

और

मौलूदे का'बा

हाफ़िज़ शम्सुद्दीन अबूल मुज़फ़्फ़र युसुफ बिन क़िज़ूग़ली इब्न अब्दुल्लाह अल बगदादी (वफात : सन 654 हिजरी) लिखते है :

"रिवायत है के हज़रत अ़ली की वालिदा फातिमा बिन्ते असद बैतुल्लाह के तवाफ़ में मशग़ूल थी और हमल से थी पस उनको दर्दे जेह हुवा तो उनके लिए का'बा का दरवाजा खुल गया और वोह अन्दर दाखिल हुई और बच्चा का'बा में पैदा हुवा और इसी तरह हकीम बिन हिजाम को उनकी वालिदा ने का'बा में जना ।"

"मैं कहता हूं इसे हाफिज अबू नुएम ने रिवायत किया है और एक लम्बी हदीष उसकी फज़ीलत में नकल कर दी है मगर उन्होंने सिलसिलाए सनद में रोव्ह बिन सलाह का नाम लिया है जिसे इब्न अदी ने ज़इफ कहा है इस लिये हम उसका ज़िक्र करना मुनासिब नहीं समजते ।"

(किजूग़ली फी तज़्किरातुल खव्वास, अल मा'रुफ बि तज़्किरातुल खव्वास अल उम्माह फी खसाइसुल अइम्मा - सफा-10)

7 शैखुश्शाफिइय्या और मौलूदे का'बा

शैखुल शाफिईया अल आरिफुलसूफी शरफुद्दीन अबी मुहम्मद उमर बिन शुजाउद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुलवाहिद अल मौसिली (वफात : सन 657 हिजरी) रक़म फ़रमाते हैं :

"सय्यिदिना अ़ली का'बा मुअज़्ज़मा में पैदा हुवे, उन के इलावा कोई दूसरा वहां एक ही दर्दमें पैदा नहीं हुवा ।

(मौसिली फी मनाकिबुल मुहम्मद अल मुसम्मा बि-अल-नइमुलमुकीम लि ईतरतन्नबाउल अज़ीम - सफा-55)

8 इमाम कन्जी शाफिई रहमतुल्लाह अलैह
और
मौलूदे का'बा

हाफ़िज़ अबी अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन युसुफ बिन मुहम्मदुल कुराशीउल गन्जी अल शाफिई रहमतुल्लाह अलैह (वफात : सन 658 हिजरी) लिखते हैं :

“अमीरुलमु'मिनीन अ़ली इब्न अबी तालिब अलैहिस्सलाम मक्का में बैतुल्लाह अल हरम के अन्दर पैदा हुवे ।”

(कान्जी फी किफायतुलतालिब फी मनाकिबि अ़ली इब्न अबी तालीब अलैहिस्सलाम-सफा-407)

9 मुफ्तीए इश्क अल्लामा जलालुद्दीन रुमी रहमतुल्लाह अलैह
और
मौलूदे का'बा

अल्लामा जलालुद्दीन मुहम्मद बल्खीउल मा'रुफ मौलाना जलालुद्दीन रुमी रहमतुल्लाह अलैह (वफात : सन 672 हिजरी) फ़रमाते हैं :

اے شحنۂ دشت نجف از تو نجف دیدہ شرف
تو درے و کعبہ صدف مستان سلامت می کنند

“ऐ दश्ते नजफ के मुहाफिज़ ! आप के वसीले से नजफ ने क़द्र व मन्ज़िलत पाइ हैं । आप मोती है और का'बा सीपी है । जैसे मोती सीपी के पेट से निकलता है आप का'बा से नमूदार हुवे, मुस्ताने खुदा आप की अज़्मत को सलाम पेश करते हैं ।”

(सालिह काश्फी फी मनाकिबे मुरतज़वी, मुतरजिम- सफा-158)

10 मुहद्दिषे कबीर رحمۃ اللہ علیہ और मौलूदे का'बा

मुहद्दिषे कबीर अल शैख मुहम्मद बिन इब्राहीम अल-जुवैनी अल-शाफिई رحمۃ اللہ علیہ (वफात : सन 722 हिजरी) ज़िक्रे रिवायते मौलूदे का'बा के बाद लिखते हैं के :

"हज़रत अ़ली رضی اللہ عنہ के इलावा कोइ शख्स का'बा में पैदा नहीं हुवा ।"

(जुवैनी फी फराइजुल सिम्तैन फी फज़ाइलुल मुरतज़ा वल बतूल वस्सिबतैन व अइम्मा मिन ज़ुर्रियकतिहिम, जिल्द-01 - सफा-425-426)

11 ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رحمۃ اللہ علیہ और मौलूदे का'बा

सुल्तानुल मसाइख, सुल्तानुल औलिया ख्वाजा मेहबूबे इलाही, हज़रत सय्यिद मुहम्मद निज़ामुद्दीन बिन अहमद बिन अ़ली अल बुखारी رحمۃ اللہ علیہ (वफात : सन 725 हिजरी) फ़रमाते हैं :

امام دیں کسے باشد کہ در وقت ولادت او
بود در کعبہ و کعبہ زکعبش در صفا باشد

امام حق کے باشد کہ او درطینت آدم
پیمبر رابہم بودہ ولایت را ولا باشد

"दीन का इमाम वोही हो सकता है के जिस की विलादत का'बा में हो और का'बा उसके क़दमो की बरकत से पाकीज़गी हासिल करे ।"

इमामे हक़ वोही हो सकता है जो उस वक्त भी आं-हज़रत के साथ था जबके आदम आब व गिल में थे और खुद विलायत जिसकी आरज़ू करे ।

(खुसरो क़ासिम फी काशकोले-मा'रेफत - सफा-65)

12 मुहद्दिष इमाम ज़हबी और मौलूदे का'बा

हाफ़िज़ शम्सुद्दीन अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद अज़्ज़हबी (वफात : सन 748 हिजरी) 'अल-तल्खीस' में मौलूदे का'बा पर इमाम हाकिम की इबारत को बरकरार रखा है :

"अखबारे मुतवातिरा से साबित है के हज़रत फातिमा बिन्त असद ने हज़रत अमीरुलमु'मिनीन अ़ली इब्न अबी तालीब को जौफे का'बा में जन्म दिया ।"

(ज़हबी फी अल-मुस्तदरक मा'अल तल्खीस - 03/483)

13

हाफ़िज़ ज़रन्दी

और

मौलूदे का'बा

अल्लामा हाफ़िज़ जमालुद्दीन मुहम्मद बिन युसुफ बिन अल हसन बिन मुहम्मद अल-ज़रन्दी अल-हनफी अल-मदनी (वफात : सन 750 हिजरी) रक़म फ़रमाते हैं :

"जब उन (सय्यिदिना अ़ली की वालिदा फातिमा बिन्त असद) को दर्दे जेह उठ्ठा तो अबू तालिबने 'इशा' के बाद का'बा के अन्दर दाखिल कर दिया और फिर वहीं का'बा ही में सय्यिदिना अ़ली इब्न अबी तालिब की विलादत हुई ।"

(ज़रन्दी फी नज़्म दुर्रस्सिमतैन फी फज़ाइलुल मुस्तफा वल मुर्तज़ा वल बतूल वस्सिब्तैन - सफा-76)

14

हाफ़िज़ ज़रन्दी

और

मौलूदे का'बा

अल्लामा हाफ़िज़ जमालुद्दीन मुहम्मद बिन युसुफ बिन अल हसन बिन मुहम्मद अल-ज़रन्दी अल-हनफी अल-मदनी (वफात : सन 750 हिजरी) रक़मत फ़रमाते हैं :

"मशहूर रिवायत के मुताबिक सय्यिदिना अ़ली का'बा के अन्दर जुम'आ के दिन 13 रजब को हिज़रत से 23 साल पेहले पैदा हुवे ।"

(ज़रन्दी फी मा'रिजूल वुसूल इला मारिफत फज़्ल अ़लीउल रसूल व अल बतूल - सफा-49)

15 ख्वाजा सय्यिद मुहम्मद

और

मौलूदे का'बा

शैखुलमसाइख, हज़रत ख्वाजा सुल्तान निजामुद्दीन औलिया के हालात व करामत और मल्फ़ूज़ात पर मुश्तमिल तारीख़ी तज़्किरा 'निज़ामी बन्सरी' अल-मा'रुफ "तारीखुल औलिया" में सिलसिलाए आलिया चिश्तीया निज़ामीया के जलीलुद क़द्र शैख ख्वाजा सय्यिद मुहम्मद का मल्फ़ूज़ मुबारक हैं के :

"हज़रत अ़ली का'बा के अन्दर पैदा हुवे थे और आं-हज़रत उनको बचपन से गोदमें लिये फिरते थे ।"

(हसन निज़ामी फी निज़ामी बन्सरी - सफा-43)

16 लताइफे अशरफी

और

मौलूदे का'बा

तारिके सल्तनत, इमामुल आरिफीन, गौषुल आलम, मेहबूबे यजदानी सुल्तान सय्यिद जहांगीर सम्नानी (वफात : सन 808 हिजरी) के मल्फ़ूज़ात 'लताइफे अशरफी' में अमीरुलमु'मिनीन अ़लीय्युल मुरतज़ा के मनाकिब में मरकूम है के :

"उनकी विलादत खानाए का'बा के अन्दर हुई थी ।"

(निज़ाम यमनी फी लताइफे अशरफी, मुतरजिम, जिल्द-03 - सफा-43)

17 इमाम इब्ने सब्बाग़ अल-मालिकी رحمۃ اللہ علیہ और मौलूदे का'बा

अश्शैखुल इमाम अल्लामा अ़ली बिन मुहम्मद बिन अहमद अल-मालिकी अल मक्की अल मा'रुफ इब्नुल सब्बाग़ رحمۃ اللہ علیہ (वफात : सन 855 हिजरी) अपनी तालिफ **'अल-फुसूलुल मुहिम्मा फी मा'रिफत अहवालुल अइम्मा'** में बयान फ़रमाते है :

"सय्यिदिना अ़ली علیہ السلام माहे रजब की तेरहवी (13) को जुम'आ के रोज़ मक्का शरीफ में का'बा के अन्दर पैदा हुवे । येह वोही महीना है जो अल्लाहत्आला का है जिसमें खुश्त व खून हराम है और येह मुन्फराद है सन 30 कब्ल अज़ हिज़रत, आमुल फील में हिज़रत से 23 या 25 साल क़ब्ल और बे'सत से दस या बाराह साल पेहले हज़रत अ़ली علیہ السلام के सिवा खानाए का'बा में कोई शख्स पैदा नहीं हुवा और येह वोह फज़ीलत है जिसे अल्लाह عزوجل ने उन्हे मखसूस फ़रमाया ।"

(इब्न सब्बाग फी अल-फुसूल अल-मुहिम्मा फी मा'रिफत अहवालुल अइम्मा - सफा-29)

18 मौलाना जामी رحمۃ اللہ علیہ और मौलूदे का'बा

मौलाना नुरुलैन अब्दुर्रहमान इब्न अहमद बिन मुहम्मद जामी رحمۃ اللہ علیہ (वफात : सन 898 हिजरी) लिखते हैं :

"आप (मौला अ़ली) علیہ السلام की विलादत खानाए का'बा में हुई ।"

(जामी फी शवाहिदुन्नुबुव्वत लि-तक़वीयत यकीन अहलुलफुतूवात - सफा-212)

नीज़ आप رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते है :

به سوی کعبه رود شیخ ومن به راه نجف
بهربّ کعبه که اینجا مراست حق به طرف
تفاوتی که میان من است و او این است
که من به سوی گهر رفتم او به سوی صدف

"शैख सिम्ते का'बा को जाता है और मैं नजफ की तरफ, ब-रब्बे का'बा मैं ही हक़ ब-जानिब हूं, इसमें और मुजमें बडा फर्क है, मैं मोती की तरफ जाता हूं और वोह सदफ के सम्त ।"

(सालिह कश्फी फी-मनाकिबे मुरतज़वी - सफा-172)

19 मुल्ला हुसैन वाइज़ काशिफी رحمۃ اللہ علیہ और मौलूदे का'बा

अम्बिया व अहले बैत के दर्दनाक बयान पर मुश्तमिल मुफस्सिरे कुरआन कमालुद्दीन हुसैन बिन अ़ली अलमा'रुफ मुल्ला हुसैन वाइज़ काशिफी رحمۃ اللہ علیہ (वफात : सन 910 हिजरी) की किताब 'रौज़तुश्शुहदा' जिसका तरजमा अल्लामा साइम चिश्तीने फ़रमाया है, में आप रक़म फ़रमाते हैं :

"किताब बशायिरुल मुस्तफा में यज़ीद बिन क़'नाब से रिवायत की गइ है कहा के मैं हज़रत अब्बास बिन अब्दुलमुत्तलिब رضی اللہ عنہما और जामी बिन अब्दुल उज़्ज़ा رضی اللہ عنہ के साथ बैतुल्लाह शरीफ के दरवाज़े पर बैठा हुवा था के हज़रत फातिमा बिन्त असद رضی اللہ عنہا आई और तवाफे का'बा

में मशगूल हो गई । अचानक उनके चेहरा पर वाज़ेअ हमल के आसार ज़ाहिर हुवे मगर उनमें बैतुल्लाह शरीफ से बाहर आनेकी ताक़त ना थी लेहाज़ा उन्होंने कहा इलाही मुज़ पर उस विलादत को आसान फरमा ।”

रावी ने कहा : मैंने उसी वक़्त दीवारे का’बा को शक़ होते देखा और जनाबे फातिमा رضی اللہ عنہا का’बा शरीफ के अन्दर जा कर हमारी नज़रो से गाइब हो गई हम लोगों को भी ख़्वाहिश थी के का’बे के अन्दर जायें मगर उस सूरत में मुनासिब नहीं था । चुनान्चे जनाब फातिमा बिन्त असद رضی اللہ عنہا चौथे रोज़ हरमशरीफ से बाहर आई और उन्होने हज़रत अ़ली علیہ السلام को हाथो पर उठा रखा था ।

इमाम अबू दाउद बनाकती रिवायत करतें हैं के हज़रत अ़ली علیہ السلام से पेहले और बाद किसी शख्स को भी का’बा शरीफ के अन्दर पैदा होने का शरफ हासिल नहीं हुवा, चुनान्चे उन्होंने इस तरह कहा हैं :

ولدة في الحرام المعظم أمه

طالب وطالب وليدها ولمولد

(काशिफी फी रौज़तुश्शुहदा, मुतरजिम, जिल्द-01 - सफा-328/329)

20 इमाम जलालुद्दीन सुयूती رحمة الله عليه और मौलूदे का'बा

हाफिज़ जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र अल सुयूती رحمة الله عليه (वफात : सन 911 हिजरी) 'तदरीबुल रावी' में फ़रमाते हैं :

"सय्यिदिना अ़ली عليه السلام मौलूदे का'बा हैं ।"

(सुयूती फी तदरीबुल रावी फी शरह तक़रीबुन्नवावी, जिल्द-02 - सफा-880)

21 इमाम दियार बाकरी رحمة الله عليه और मौलूदे का'बा

तारीखे़ इस्लाम के अज़ीम मुहक्क़िक़ व मु'अर्रिख इमामुल शैख हुसैन बिन मुहम्मद बिन अल हसन अल दियार बाकरी رحمة الله عليه (वफात : सन 966 हिजरी) लिखते हैं :

"अमीरुलमु'मिनीन अ़ली इब्न अबी तालिब عليه السلام का'बा में पैदा हुवे ।

(दियार बाकरी फी तारीखुल खमीस फी अहवाल अन्फासनाफिस, जिल्द-01 - सफा-279)

22 मुहद्दिष मुल्ला अ़ली क़ारी
और
मौलूदे का'बा

अल्लामा मुल्ला अ़ली बिन सुल्तानुल कारी अल हरवी अल-हनफ़ी नक्शबन्दी (वफात : सन 1014 हिजरी) लिखते हैं :

"मुस्तदरक अल-हाकिम में है के नीज़ सय्यिदिना अ़ली का'बा मुअज़्ज़मा में पैदा हुवे ।"

(मुल्ला अ़ली क़ारी फी शरह शिफाउल क़ाज़ी इयाज़, जिल्द-01 - सफा-151)
(खफाजी फी नसीम अल रियाज़ शरह शिफाउल क़ाज़ी इयाज़, जिल्द-01 - सफा-328)

23 इमाम नुरुद्दीन हलबी
और
मौलूदे का'बा

अल इमामुल आलिम अल्लामा अबूल फराज अ़ली बिन इब्राहीम बिन अहमद नुरुद्दीन बिन बुरहानुद्दीन अल-हलबी अल-क़ादिरी अल-शाफिई (वफात : सन 1044 हिजरी) फ़रमाते हैं :

"जब सय्यिदिना मौला अ़ली की विलादत खानाए का'बा में हुई उस वक्त हुज़ूर नबी करीम की उम्र मुबारक 30 साल या कुछ ज़ियादा थी ।"

(हलबी फी अल-सीरह अल-हलबीया, इन्सानुल उयून फी सीरतुल अमीरनुल-मा'मून, जिल्द-01 - सफा-202)

24 अब्दुलहक़ मुहद्दिष दिहल्वी رحمۃ اللہ علیہ और मौलूदे का'बा

अल्लामा शैख अब्दुलहक़ बिन सैफुद्दीन बिन सा'दुल्लाह बुखारी अल-दिहल्वी अल-हनफ़ी رحمۃ اللہ علیہ (वफात : सन **1052** हिजरी) रक़्म फ़रमाते है :

"और मु'अर्रिखीन ने कहा है के सय्यिदिना अ़ली رضی اللہ عنہ की विलादत का'बा के अन्दर हुई ।"

(अब्दुलहक़ मुहद्दिष दिहल्वी फी मदारिजुन्नुबूव्वह, जिल्द-02 - सफा-531)

(अब्दुलहक़ मुहद्दिष दिहल्वी फी मदारिजुन्नुबूव्वह, मुतरजिम, जिल्द-02 - सफा-623)

25 मुअर्रिख दारा शिकोह क़ादरी رحمۃ اللہ علیہ और मौलूदे का'बा

बर्रे सगीर के मशहूर मु'अर्रिख शेहज़ादा मुहम्मद दारा शिकोह क़ादरी رحمۃ اللہ علیہ (वफात : सन **1069** हिजरी) 'सफीनतुल औलिया' में लिखते हैं :

"खानाए का'बा में आप (मौला अ़ली رضی اللہ عنہ) मुतवल्लिद हुवे ।"

(दारा शिकोह फी सफीनतुल औलिया, मुतरजिम - सफा-36)

26 शैख़ अब्दुर्रहमान चिश्ती رحمة الله عليه और मौलूदे का'बा

ग्यारवी सदी हिजरी के अज़ीम मुअर्रिख और तज़्किरा निगार शैख अब्दुर्रहमान चिश्ती साबिरी رحمة الله عليه (वफात : सन 1094 हिजरी) तसव्वुफ की हज़ार साला तारीख़ पर मुश्तमील अपनी अज़ीम तेहक़ीक़ी तस्नीफ "मिरातुल असरार" में सय्यिदिना मौला अ़ली رضي الله عنه का ज़िक्र मुबारक यूं करते हैं :

"इस आकिबाते महमूद की जा'ए विलादत खानाए का'बा है येह सआदत अज़ल से अबाद तक किसी फर्दे बशर को नसीब नहीं हुई ।"

(अब्दुर्रहमान चिश्ती फी मिरातुल असरार, मुतरजिम - सफा-178)

27 खलीफाए मुजद्दिदे अल्फेषानी رحمة الله عليه और मौलूदे का'बा

खलीफाए मुजद्दिदे अल्फषानी शैख बदरुद्दीन बिन मुहम्मद इब्राहीम सरहिन्दी नक्शबन्दी رحمة الله عليه अपनी मायेनाज तसानीफ "हज़्रातुल कुद्दुस" में रक़म फ़रमाते हैं :

"आप رضي الله عنه की विलादत खानाए का'बा में जुम'आ के दिन तेरावीं (13) या सातवीं (7) शाबान को हुई ।"

(बदरुद्दिन सरहिन्दी फी हज़्रातुल कुद्दुस - सफा-83)

28 हाफ़िज़ मुहम्मद बदख़्शानी رحمۃ اللہ علیہ और मौलूदे का'बा

हाफ़िज़ मुहम्मद बिन मु'तमिद खान अल-बदख़्शानी رحمۃ اللہ علیہ (वफात : सन 1126 हिजरी) लिखते हैं :

"सय्यिदिना अ़ली علیہ السلام की विलादत ब-रोज़ जुम'आ 13 रजब, आमुलफील में ब-मुकाम मक्का वाक़ेअ हुई और रिवायत है के वोह जनाब खानाए का'बा में पैदा हुवे औह हुजराए का'बा में कोई ना उनसे पेहले पैदा हुवा, ना बाद । येह वोह फज़ीलत है जिससे खुदाने उन्हें मख़्सूस किया था ।"

(बदख़्शानी फी नुज़ूलुल अबरार बि-मा सह मिन मनाकिब अहलुलबैतुल अत्हार - सफा-115)

29 मुहम्मद अकरम कुद्दूसी رحمۃ اللہ علیہ और मौलूदे का'बा

शैख मुहम्मद अकरम इब्न मुहम्मद अ़ली हनफी कुद्दूसी رحمۃ اللہ علیہ "इक्तिबासुल अनवार ज़मानाए तालिफ 1130 हिजरी" में लिखते है :

"आप (मौला अ़ली) علیہ السلام का तवल्लुद आमुल-फील के सात साल बाद खानाए का'बा में हुवा । परदाए राज़ के पीछे जो कुछ था ज़ाहिर हुवा या'नी असदुल्लाहुल-गालिब पैदा हुए ।

येह सआदत (या'नी का'बातुल्लाह में पैदा होना) इब्तेदाए आफरीनिश से आज तक किसी बशर को हासिल नहीं हुई ।

(मुहम्मद अकरम फी इक़्तेबासुल अनवार, मुतरजिम, - सफा-104)

30

सय्यिद सालिह काश्फी रहमतुल्लाह अलैह
और
मौलूदे का'बा

मीर सय्यिद सालिह काश्फ़ी अल-तिरमिज़ी अल-सुन्नी अल-हनफी अल-क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह (वफात : सन **1160** हिजरी) **'मनाकिबे मुरतज़वी'** में बयान करते हैं :

"यज़ीद बिन क'नाब से रिवायत है के मैं अब्बास बिन अब्दुलमुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ था और अब्दुल उज़्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का एक गिरोह खानाए का'बा के पास बैठा हुवा था । हज़्रत फातिमा बिन्त असद रज़ियल्लाहु अन्हा बैतुल्लाह में आई, ऐन तवाफ की हालात में उन पर आसारे विलादत तारी हुवे, बाहर जाने के लिये वक्त न था । हज़्रत फातिमा बिन्त असद रज़ियल्लाहु अन्हा ने दुआ की : 'खुदावन्द ! इस बा-बरकत खानाए का'बा की हुरमत का वास्ता, विलादत की तकलीफ को मुज़ पर आसान फरमा । रावी केहता है के दिवारे का'बा शक़ हुई जनाबे फातिमा बिन्त असद रज़ियल्लाहु अन्हा अन्दर गई और चौथे दिन जनाबे अमीर करमल्लाहु वज्हहु को अपने हाथों पर लिये बर-आमद हुई ।'

(तिरमिज़ी फी मनाकिबे मुरतज़वी दर मनाकिबे शाहे औलिया, अमीरुलमु'मिनीन अ़लीय्युल मुर्तज़ा अलैहिस्सलाम- सफा-171)

31 शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिष दिहल्वी عليه الرحمة और मौलूदे का'बा

हज़रत इमामुल मुहद्दिषीन शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिष दिहल्वी عليه الرحمة (वफात : सन 1176 हिजरी) ने अपनी तस्नीफ 'कुर्रतुलऐनैन' में मौलाए काएनात सय्यिदिना अ़ली عليه السلام की विलादत दर खानाए का'बा का ज़िक्र फ़रमाते हुवे लिखते हैं :

"आप عليه السلام के फज़ाइल व मनाकिब बेशुमार हैं आप पेहले हाशमी है जिनकी वालिदा माजिदा رضي الله عنها भी हाशिमीया है आप की पैदाइश खानाए का'बा में हुई और येह एक ऐसी फज़ीलत है जो आप से पेहले किसी के हिस्से में नहीं आई ।"

(शाह वलीउल्लाह फी कुर्रतुलऐनैन फी तफज़ीलुल शेखैन - सफा-138)

नीज़ 'इज़ालतलखाफ़ा' में लिखते है के :

"सय्यिदिना मौला अ़ली عليه السلام के मनाकिब में से जो उनकी पैदाइश के वक़्त ज़ाहिर हुवे एक येह भी है के वोह खानाए का'बा के अन्दर पैदा हुवे ।"

(शाह वलीयुल्लाह फी इज़ालतुलखाफा अन खिलाफतुल खुलफा - सफा-405-406)

(शाह वलीयुल्लाह फी हज़रत अ़ली के फज़ाइल व मनाकिब - सफा-26)

32 इमाम अमीरुल यमनी कहलानी رحمۃ اللہ علیہ और मौलूदे का'बा

इमाम मुहम्मद बिन इस्माइल बिन सलाह बिन मुहम्मद बिन अ़ली अल-शाहीर बि-अल अमीरुल हाशिमीयुलहसनी अल यमनीयुलकहलानी رحمۃ اللہ علیہ (वफात : सन 1182 हिजरी) लिखते हैं :

"सय्यिदिना अ़ली کرم اللہ وجہہ की पैदाइश मक्का मुकर्रमा में खानाए का'बा शरीफ के अन्दर 13 रजब को आमुल फील के तीसवें (30) बरस हुई और आप की वालिदा माजिदा सय्यिदा फातिमा बिन्त असद बिन हाशिम رضی اللہ عنہا हैं ।"

(सन'आनी फी अल रौजुन्नादीया फी शरहुल तुहफातुलऔलिया - सफा-36)

33 शाह अब्दुलअज़ीज़ رحمۃ اللہ علیہ और मौलूदे का'बा

सिराजुलहिन्द शाह अब्दुलअज़ीज़ बिन शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिष दिहल्वी رحمۃ اللہ علیہ (वफात : सन 1239 हिजरी) अपनी किताब 'तुहफाए इषना अशरीया' में रक़म तराज़ है :

"जिस वक्त आप का'बा के दरवाज़े पर आई, दर पे दर्दे जेह होने लगा और हज़रत अमीर کرم اللہ وجہہ के विलादते बा-सआदत हो गई ।"

(शाह अब्दुल अज़ीज़ दिहल्वी फी तुहफाए इषना अशरीया - सफा-79)

34 साहिबे तफ्सीर रुहुल म'आनी رحمۃ اللہ علیہ और मौलूदे का'बा

ख़ातिमतुल मुहक़्क़िक़ीन व अम्दतुल मजक़्क़िक़ीन, मारजाए अह्ले इराक व मुफ्तीए बग़दाद अल्लामा अबू षाना शिहाबुद्दीन सय्यिद महमूद इब्न अब्दुल्लाह अल हुसैनी आलूसी अल बग़दादी رحمۃ اللہ علیہ (वफात : सन 1270 हिजरी) लिखते है :

"सय्यिदिना अमीर رضی اللہ عنہ की विलादत बैतुल्लाह शरीफ में होना दुनियाभर में मशहूर है और सुन्नी शिआ दोनों फिरकों ने इस का ज़िक्र अपनी अपनी किताबों में किया है ।"

(आलूसी फी शरहुल खारीदा अल-ग़ायबिया फी शरह क़ासीदा अल-एनीया - सफा-15)

35 मुफ्तीए आजम कुस्तुन्तिनीय्या رحمۃ اللہ علیہ और मौलूदे का'बा

मुफ्तीए आज़म कुस्तुन्तिनीया, अल्लामा शैख सुलेमान बिन इब्राहीम अल-कुन्दूज़ी अल-हनफी رحمۃ اللہ علیہ (वफात : सन 1294 हिजरी) "यनाबीउल मवद्दा" में अबू उष्मान अल जाहिज़ अल बसरी (वफात : सन 255 हिजरी) के हवाले से लिखते हैं :

"अगर हम सय्यिदिना अ़ली رضی اللہ عنہ के फज़ाइल शरीफ़ा, मक़ामाते काइमा, दरजाते राफीआ और मनाक़िबे सानिया को शुमार करे तो बोहत जिल्दे और किताबों के दफ्तर हो जाएंगे । आप رضی اللہ عنہ हज़रत

आदम ﷺ के सहीह जड हैं और आप ﷺ का नसब बे-ऐब है, आप ﷺ अज़ीम जा'ए पैदाइश (का'बा) वाले, मुबारक व मुकर्रम, नश व नुमावाले, बुलन्द शान वाले, बुलन्द मरतबाए आमाल वाले है । आप ﷺ की कोई नज़ीर नहीं ।"

(कुन्दूज़ी फी यनाबी अल-मवद्दा लि-ज़ावीउल कुरबा, जिल्द-01 - सफा-182)

36 सदरुल आलम दिहल्वी رحمة الله عليه और मौलूदे का'बा

अश्शैख मुहम्मद सदरुलआलम बिन फखुलइस्लाम अल-अमरी अल-दिहल्वी अल-सूफी رحمة الله عليه लिखते हैं :

"आप ﷺ की वालिदा फातिमा बिन्द असद बिन हाशिम बिन अब्द मनाफ رضي الله عنها हाशिमीया हैं, येह पेहली खातून है जिन्होने का'बा शरीफ के अन्दर एक हाशमी बच्चे को जन्म दिया, इस्लाम लाई, हिज़्रत की और आप ﷺ की ज़िन्दगी में ही वफात पा गई । उनकी नमाज़े जनाज़ा खुद रसूले करीम ﷺ ने पढाई और उनकी कब्र में भी खुद उतरे, जैसा के हाकिम ने मुस्तदरक में हज़्रत अ़ली ﷺ के हवाला नकल किया है ।

(सदरुलआलम फी मा'रिजुल उला फी मनाकिबुल मुरतज़ा ﷺ - सफा-100)

37 मौलाना मुहम्मद नासिर अ़ली رحمۃ اللہ علیہ और मौलूदे का'बा

मौलवी हकीम मुहम्मद नासिर अ़ली बिन शैख हैदर अ़ली हनफी गियासपुरी अज़ीमाबादी رحمۃ اللہ علیہ (वफात : सन 1305 हिजरी) हज़रत मुर्तज़ा अ़ली رضی اللہ عنہ की विलादत शरीफ के बयानमें लिखते हैं :

"रिवायत है के आप رضی اللہ عنہ की मा फातिमा बिन्त असद رضی اللہ عنہا तवाफे का'बा में मशगूल थी के आसारे विलादते बा-सआदत के पैदा हुवे, तवाफ से जल्दी फरागत करके का'बातुल्लाह के अन्दर वोह गई, वहां आप رضی اللہ عنہ पैदा हुवे ।"

(नासिर अ़ली फी नासिर अल-अबरार फी मनाक़िब अह्ले बैतुल अत्हार - सफा-77/78)

38 नवाब सिद्दीक़ हसन खान भोपाली और मौलूदे का'बा

मशहूर अह्ले हदीष आलीम अल्लामा सय्यिद सिद्दीक़ हसन खान अल हुसैनीयुल बुखारी अल कन्नौंजी (वफात : सन 1307 हिजरी) "तारीखुल मु'मिनीन ब-तक़वीम मनाकिबुल खुल्फा अल-राशिदीन" में लिखते है :

"विलादत उनकी (رضی اللہ عنہ) मक्का मुकर्रमा में अन्दर बैतुल्लाह के हुई । उनसे पेहले कोई बैतुल हरम के अन्दर मौलूद नहीं हुआ था ।

(कन्नौंजी फी तकरीमुल मु'मिनीन बि-तकवीम मनाकिबुल खुल्फा अल-राशिदीन - सफा-99)

39 हकीम मुफ्ती गुलाम सरवर लाहोरी رحمۃ اللہ علیہ और मौलूदे का'बा

अल्लामा अल्हाज हकीम मुफ्ती गुलाम सरवर बिन गुलाम मुहम्मद कारीशी असदीयुल हाशिमी सरवरी चिश्ती लाहोरी رحمۃ اللہ علیہ (वफात : सन 1307 हिजरी) लिखते हैं :

"आप رضی اللہ عنہ मक्का मुअज़्ज़मा और ब-कौल दीगर खानाए का'बा में पैदा हुवे । आप رضی اللہ عنہ की विलादत ब-रोज़ जुमआ 13 रजबुल मुरज्जब 30 बाद अज़ वाकेए फील हुई ।"

(गुलाम सरवर फी खज़ीनतुल-अस्फीया, मुतरजिम, जिल्द-01 - सफा-59)

40 अश्शैख अल्लामा शबलन्जी رحمۃ اللہ علیہ और मौलूदे का'बा

अश्शैख अल्लामा सय्यिद मुअमिन इब्न हसन मुअमिनुल शबलन्जी رحمۃ اللہ علیہ (वफात : सन 1308 हिजरी) लिखते हैं :

"सय्यिदिना अ़ली इब्न अबी तालिब علیہ السلام हुजूर नबीये करीम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم के चचाज़ाद भाई और अल्लाह की नन्गी़ तलवार हैं । आप علیہ السلام हिज्रत से 23 या 25 साल पेहले और हुजूर नबीए करीम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم के इज़्हारे नुबुव्वत से बाराह (12) या दस (10) बरस पेहले मक्का मुकर्रमा में अस्हाबे फील के हमला के तीसवें (30) बरस 13 रजब को जुमआ के रोज़ बैतुल्लाह शरीफ के अन्दर पैदा हुवे । उनसे पेहले बैतुल्लाह शरीफ में उनके सिवा कोई पैदा ना हुवा था ।"

(शबलन्जी फी नूरुलअब्सार फी मनाकि़बुल आलेबैतुन्नबी अल मुख़्तार - सफा-158)

41 सीरते मुस्तफा जाने रेहमत और मौलूदे का'बा

"सीरते मुस्तफा जाने रहमत" में मौलाना मुहम्मद इसा क़ादरी रज़वीने नक़ल किया है के :

"अह्ले सियार कहते है के उन (सय्यिदिना मौला अ़ली) की विलादत जौफे का'बा में हुई थी, येह कदीमुल इस्लाम थे, हज़रत इब्न अब्बास, जैद इब्न अरक़म, सलमान फारसी, मिक़्दाद बिन अस्वद और बा-कसरत सहाबाए किराम इस पर हैं के वोह अव्वलुल इस्लाम हैं ।"

(मुहम्मद इसा फी सीरते मुस्तफा जाने रहमत, जिल्द-04 - सफा-783)

42 मुफ़स्सिरे कुर्आन अबूल हसनात और मौलूदे का'बा

मुफस्सिरे कुरआन साहिबे 'तफसीरुल हसनात' हज़रत अल्लामा अबूल हसनात सय्यिद मुहम्मद अहमद क़ादरी चिश्ती साबरी अशरफी हनफी (वफात : सन 1380 हिजरी) "औराक़े ग़म" में रक़म फ़रमाते हैं :

"साहिबे बशाइरुल मुस्तफा नकल फ़रमाते है के मैं अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब और चन्द कबीलाए बनी अब्दुल-उज़्ज़ा के लोगों के साथ मस्जिदे बैतुल-हराममें बैठा हुवा था के फातिमा बिन्त असद

मस्जिद में आई और उनको नौवां महिना था, जब वोह मशगूले तवाफ हुई तो शौते राबे में चलने की कुव्वत ना रही तो आप पुकारी, 'अय खुदावन्दे का'बा इस विलादत को मुज़ पर आसान फरमा' के यकलख़्त दीवारे का'बा शक़ हुई और फातिमा बिन्त असद ﷺ अन्दरुने का'बा तशरीफ ले गई और हमारी नज़र से गाइब हो गई । हमने अन्दरुने का'बा आप को तलाश किया मगर आप ﷺ ना मिली । चौथे रोज़ आप इसी का'बा से बहार तशरीफ लाई और हज़रत अ़ली ﷺ को गोदमें लिये हुवे थी ।"

(अबुल हसनात फी औराक़े ग़म - सफा-199)

43 अब्बास महमूद अक्क़ाद ﷺ और मौलूदे का'बा

मशहूर सीरत निगार अब्बास महमूद अक्क़ाद ﷺ (वफात : सन 1383 हिजरी) ने सय्यिदिना मौला अ़ली ﷺ की पैदाइश को खानाए का'बा की अज़मत व शौकत की तजदीद और खुदाए वाहिद की परस्तिश के दौरे जदीद से ता'बीर किया है, चुनान्चे रक़मतराज़ है :

"हज़रत मौला अ़ली इब्ने अबी तालिब ﷺ खानाए का'बा के अन्दर पैदा हुवे और अल्लाह त्आला ने उनके चेहरे को बुताने का'बा के आगे जुकने से बुलन्दतर रखा गोया उस मकाम पर उनकी पैदाइश का'बा के नये दौर का आग़ाज़ खुदाए वाहिद की इबादत का एलाने आम था ।"

(अक्क़ाद फी अब्क़ारीयातुल इमाम अ़ली ﷺ - सफा-23)

44 मुफ्ती अहमदयार खान नईमी رحمۃ اللہ علیہ और मौलूदे का'बा

मुफ्ती अहमदयार खान नईमी अशरफी बदायूनी رحمۃ اللہ علیہ (वफात : सन 1391 हिजरी) **"मन्बाए विलायत"** से अपनी अक़ीदत का इज़्हार यूं फ़रमाते हैं :

"हज़रत अ़ली رضی اللہ عنہ ऐसे आबिद व ज़ाहिद के पैदाइश भी हुई तो खानाए का'बा में हुई, हमने अर्ज़ किया :"

کسے را میسر نہ شد ایں سعادت
بہ کعبہ ولادت بہ مسجد شہادت
بنا اس واسطے اللہ کا گھر جائے پیدائش
کہ وہ اسلام کا کعبہ تھا یہ ایمان کا کعبہ

"आप رضی اللہ عنہ शरीयत व तरीक़त का मजमा, औलियाअल्लाह رحمۃ اللہ علیہم को विलायत तक़सीम फरमाने वाले हैं, आप رضی اللہ عنہ ही नस्ले मुस्तफा صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم के नख़्ल की अस्ल है, हुज़ूर صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने उनके घर में और उन्होने हुज़ूर صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم के दौलतखानामें परवरिश पाई, सारे औलियाअल्लाह رحمۃ اللہ علیہم इन्ही के दरवाजे से फैज़ लेनेवाले हैं, इसीलिए औलियाअल्लाह رحمۃ اللہ علیہم हज़रत अ़ली رضی اللہ عنہ के दिलदाद और आप पर शैदा होते है, के विलायत का टुकड़ा इन्ही के हाथों से पाते हैं, हर चीज़ अपने मोहसीन पर फिदा होती है ।"

(नईमी फी शाने हबीबुर्रहमान मिन आयातुल कुरआन - सफा-222)

45 उस्ताज़ुल अल्लामा अबू शुहबा और मौलूदे का'बा

खादिमुल कुरआन वल सुन्ना अल उस्ताज़ुल अल्लामा अश्शैख मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन सुवैलम अबू शुहबा (वफात : सन 1403 हिजरी) लिखते हैं :

"सय्यिदिना अ़ली इब्न अबी तालिब मौलूदे का'बा हैं ।"

(अबू शुहबा फी अल-वासीत फी-उलूम व मुस्तलाउल हदीष - सफा-660)

46 अब्दुल मुस्तफा आज़मी और मौलूदे का'बा

अल्लामा मुहम्मद अब्दुल मुस्तफा बिन शैख हाफिज़ अब्दुर्रहीम आज़मी नक्शबन्दी बरेल्वी (वफात : सन 1406 हिजरी) लिखते हैं :

"खलीफाए चहारुम जा-नशीने रसूल व ज़ौजे बतूल हज़रत अ़ली इब्न अबी तालिब की कुनया **'अबुल हसन'** और **'अबू तुराब'** है । आप हुज़ूर अक्दस के चचा अबू तालिब के फरज़न्दे अर्जुमन्द हैं । आमुल फील के तीस (30) बरस बाद जबके हुज़ूर अक़्दस की उम्र शरीफ तीस (30) बरस की थी, 13 रजब को जुम'आ के दिन हज़रत अ़ली खानाए का'बा के अन्दर पैदा हुवे । आपकी वालिदा माजिदा का नाम हज़रत फातिमा बिन्त असद है ।

(आज़मी फी करामाते सहाबा - सफा-101)

47 उस्ताज़ अब्दुल फत्ताह मिसरी और मौलूदे का'बा

उस्ताजुल कातिब अल्लामा-अब्दुलफताह अब्दुल मकसूद अल मिसरी (वफात सन : 1413 हिजरी) अपनी तालीम 'अल-इमाम अ़ली इब्न-अबी तालिब में फ़रमाते हैं :

'हज़रत अ़ली की विलादत ऐसी है के ऐसी विलादत किसी और बच्चे की नहीं है... और येह खबर सुनकर लोग हैरान हो गए, लोग फातिमा बिन्त असद के तआउन के लिए बढ़ें और इस तरह हाथ पक़ड के घर लाए के भरपूर निगाहें उनकी ज़ियारत से शरफ हासिल कर रही थी जिनकी पैदाइश का मरकज़ बैतुल्लाह और जिनका परदा-पोशिश खानाए खुदा है ।'

(अब्दुलफताह फी अल इमाम अ़ली इब्न अबी तालिब जिल्द 01 सफा-36)

48 अल्लामा अता मुहम्मद बन्दियालवी और मौलूदे का'बा

इमामुल मनातिक़ा उस्ताजुल अरब वल-अजम मलिकुल मुदर्रिसीन हज़रत अल्लामा अता मुहम्मद बन्दियालवी चिश्ती गोलडवी (वफात : सन 1419 हिजरी) 'मस्अलाए नूर' गुफ्तगू करते हुवे 'मदारिजुनुब्बुवत' से शैख मुहक्क़िक़ की एक इबादत नक़्ल फरमाने के बाद यूँ रक़्मतराज हैं :

'आँ-हज़रत व दूसरे अम्बिया और औलियाए किराम में एक फर्क येह भी है के आँ-हज़रत की वजह से ज़मान

और मकान को शराफत हासिल हुई है इसलिए आप ﷺ की विलादत मुबारक पीर के दिन को हुइ ता'के सोमवार को आपकी विलादत की वजह से सर्फ हासिल हो अगर विलादते मुबारका जुमआ के दिन होती तो येह वहम पडता के शायद जुम'आ की शराफत की वजह से आप ﷺ को बुजुर्गी हासिल हुइ है इस तरह फुक़हा और मुहद्दिषीन ने तसरीह फरमाई है के कब्रे मुबारक की वोह मिट्टी जो आप ﷺ के रुत्बा का'बा शरीफ से जियादा है आपके सिवा दूसरे मकबूलाने बारगाहे इज़्दी को जमान और मकान से शराफत हासिल होती है चूँ के आदम عليه السلام की पैदाइश जुम'आ को और इमाम हुसैन رضي الله عنه की शहादत दसवीं मुहर्रमुल हराम को हुई और हज़रतअ़ली كرم الله وجهه की विलादत का'बा शरीफ में हुइ ता'के ज़मान और मकान की शराफत से इन हज़रात को बुजुर्गी अता हो ।'

(बन्दियालवी फी जिक्र 'अता' फी हयात उस्ताज़ुल उलमा, सफा-1107/08)

49 सय्यिद अबूल हसन नदवी और मौलूदे का'बा

अल्लामा सय्यिद अबूल हसन अलीयुल हुसैनीयुल नदवी (वफात : सन 1420 हिजरी) सय्यिदिना मौला अ़ली كرم الله وجهه की शान मुबारक में लिख्खी किताब 'अल मुर्तज़ा' में रक़मतराज है :

'ये तवातुर से साबित है के फातिमा बिन्त असद رضي الله عنها के बतन से सय्यिदिना अ़ली كرم الله وجهه खानाए का'बा के अन्दर पैदा हुवे ।'

(नदवी फील मुर्तज़ा सीरत अमीरुलमु'मिनीन सय्यिदिना अबूल हसन अ़ली इब्न अबी तालिब رضي الله عنه ,सफा-28)

50 अल्लामा सय्यिद महमूद अहमद रज़वी رحمۃ اللہ علیہ और मौलूदे का'बा

अमीरे अह्ले सुन्नत शारेह बुख़ारी अल्लामा सय्यिद महमूद अहमद बिन मुफ्तीए आज़म पाकिस्तान अल्लामा अबूल बरकात सय्यिद अहमद बिन इमामुल मुहद्दिषीन अल्लामा अबू मुहम्मद सय्यिद दीदार अ़ली शाह रिज़्वी رحمۃ اللہ علیہ (वफात सन 1420 हिजरी) अपनी तसनीफ 'शाने सहाबा' में 'हज़रत अ़ली کرم اللہ وجہہ का'बा में पैदा हुवे, आगोशे नुबुवत में तरबीयत पाई के जेरे उनवाल लिखते है :

'जनाब अमीरुलमु'मिनिन अ़ली کرم اللہ وجہہ की विलादत मक्का मुअज़्ज़मा में का'बा शरीफ के अन्दर 13 रजब 30 आमुल फील बरोज जुम्अतुल मुबारक को हुई । हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने आपका नाम 'अ़ली' रखा । आपके वालिद बुजुर्गवार अबू तालिब बिन अब्दुलमुतलिब बिन हाशिम बिन अब्दुलमनाफ رضی اللہ عنہ है ।'

(रिजवी फी साने सहाबा رضی اللہ عنہ, सफा-135)

51 अल्लामा साइम चिश्ती رحمۃ اللہ علیہ और मौलूदे का'बा

मुफस्सिरे कुर्आन, मुहक्क़िक़ व मुतरजिम, उर्दू और पंजाबी अदब के बुलन्दपाया आदीब साहिबे तर्ज़ शाइर व ना'तगो, आशीक़ाने रसूल صلی اللہ علیہ وسلم और मुहिब्बाने आले रसूल صلی اللہ علیہ وسلم को ब-नाम 'इमाने अबी तालिब رضی اللہ عنہ' एक अनमोल तोहफा अता फरमानेवाले हज़रत अल्लामा साइम चिश्ती رحمۃ اللہ علیہ (वफात सन - 1420 हिजरी) सीरते सय्यिदिना हैदरे कर्रार علیہ السلام पर तालीफ 'मुश्किलकुशा' में रक़म फ़रमाते है :

'मो'तबर और मशहूर रिवायात के मुताबिक़ सुल्तानुल औलिया, ताजदारे अह्ले सुन्नत, अमीरुलमु'मिनीन, इमामुल मुस्लिमीन, साहिबे ज़ुल्फिक़ार, हैदरे कर्रार, मुर्तज़ा, मुश्किलकुशा, शेरे खुदा, सय्यिदिना मौलाना हज़रत अ़ली كرم الله وجهه एन जौफे का'बतुल्लाह में सय्यिदुल अय्याम जुम'अतुल मुबारक के दिन 13 रजबुल मुरज्जब को 30 आमुल फील में अपनी वालिदा मुकर्रमा हज़रत जनाबे सय्यिदा फातिमा बिन्त असद رضي الله عنها की आगोशे रा'फत में तशरीफ लाए ।

फील हक़ीक़त का'बा मुअज़्ज़मा में पैदा होने का शरफ सिवाए आप के किसी दूसरे को हासिल नहीं बा'ज़ रिवायात में आता है के जनाबे हैदरे कर्रार رضي الله عنه से पेहले अम्र बिन हिजाम की विलादत भी का'बा मुअज़्ज़मा में हुई लेकिन येह रिवायत ना तो तवातुर का दर्जा रखती है और ना ही इससे सिक़ा लोगों ने कुबूल किया है और अगर किसी ने येह रिवायत कुबूल की भी है तो वोह उसे एक इत्तेफाकी अम्र करार देता है जैसा के 'नुज़हतुल मजालिस शरीफ में है :

واما عمرو بن حزام فولدته امه فی اککعبة اتفاقاه لا قصدا۔

बहर हाल सिफा मुहद्दिषीन और सीरत निग़ार इस पर मुत्तफिक़ है के का'बा शरीफ में हज़रत अ़ली كرم الله وجهه की विलादते मुबारका उनका खास्सा है जिस में कोई दूसरा शरीक नहीं ।'

(साइम चिश्ती फी मुश्किलकुशा, जिल्द-01, सफा-104/105)

52 डोक्टर मुहम्मद हमीदुल्लाह और मौलूदे का'बा

डोक्टर मुहम्मद हमीदुल्लाह (वफात सन १४२३ हिजरी) लिखते है :

'येह अबू तालिब बिन अब्दुलमुत्तलिब رضی اللہ عنہ और उनकी बीबी फातिमा बिन्त असद बिन हाशिम رضی اللہ عنہا के बेटे पैग़म्बरे इस्लाम ﷺ के चचाज़ाद भाई और दामाद, और साबिकीन अव्वलीन में से थे । विलादत केहते है उस वक्त हुई जब हामिला माँ जौफे का'बा के अन्दर थी ।'

(हमीदुल्लाह फी हज़रत अ़ली इब्न अबी तालिब رضی اللہ عنہ, सफा-02)

53 शैखुल हदीष जामिया निजामीया रज़वीय्या رحمۃ اللہ علیہ और मौलूदे का'बा

अल्लामा मुहम्मद अब्दुलहकीम शरफ क़ादरी लाहोरी बरक़ाती शैखुल हदीष जमिया निज़ामीया रज़वीय्या लाहोर رحمۃ اللہ علیہ (वफात सन 1428 हिजरी) मा'रुफ किताब 'बदाई मन्जुम' के हाशिया मे शे'र :

بعد ازاں حامل لوائے نبی   شاہِ مردان حق علی ولی

के तहत फ़रमाते हैं :

मम्बए विलायत हज़रत अ़ली इब्न अबी तालिब علیہ السلام की कुनियत' अबूल हसन और 'अबू तुराब' है, आमुल फील के तीस (30) साल बाद बैतुल्लाह शरीफ में पैदा हुवे'

(अब्दुल हकीम फी बदाइ मन्जूम, सफा-05)

54 अल्लामा पीर सय्यिद नसीरुद्दीन नसीर जीलानी और मौलूदे का'बा

फख्रे सादात, नाइबे ताजदारे गोलड़ा हज़रत अल्लामा पीर सय्यिद नसीरुद्दीन नसीर शाह चिश्ती जीलानी निज़ामी गोलाड़वीयुल हसनी वल हुसैनी (वफात सन 1430 हिजरी) फ़रमाते हैं :

क्यूं अकीदत से ना मेरा दिल पुकारे - या अ़ली,
जिसके है मौला मुहम्मद उसके है मौला - अ़ली,
जिस घडी अल्लाह के घर में हुवे पैदा अ़ली
ज़र्रा-ज़र्रा बा-अदब हो कर पुकारा, या अ़ली

(नसीरुद्दीन फी फैज़े निस्बत मामू'ए मनाकिब, सफा-38)

55 मुफ्ती गुलामरसूल नक्शबन्दी जमाअती और मौलूदे का'बा

फखुल मुदर्रिसीन जामीउल मा'कूल व अल मन्कूल उस्ताज़ुल उलमा हज़रत अल्लामा मुफ्ती गुलाम रसूल नक्शबन्दी जमा'ती (वफात सन 1431 हिजरी) 'हसब व नसबुल मौसूम बा बारह इमाम में रकमतराज है :'

'हज़रत अ़ली की पैदाइश 13 रजब जुम'आ के दिन का'बा में हुई । चुनान्चे बा'ज रिवायात मे आता है के जब फातिमा बिन्त असद का'बा के तवाफ में मशरुफ थीं तो आप को दर्दे जेह

की खफ़ीफ सी तक़लीफ मेहसूस हुई तो आप बोहत परेशान हो गई क्योंके सिवा'ए का'बा मुअज़्ज़मा के कोई करीबी मक़ाम पर बा-परदा जगह मौजूद नहीं थी । आप इस इज़्तेराब के आलम में मुताफक्किर ही थीं के यकदम का'बातुल्लाह की दीवार खुद-ब-खुद शक हो गई और आप येह अमरे ग़ाइबी तसव्वुर करके का'बा के अन्दर तशरीफ ले गई तो हज़्रत अ़ली शेरे खुदा पैदा हुवे । बा'ज़ रिवायातमें है के फातिमा बिन्त असद जब का'बा के तवाफ के लिए तशरीफ लाई तो आपके साथ हज़्रत अबू तालिब भी थे चुनान्चें उनसे फातिमा बिन्त असद ने अपनी हालत का ज़िक्र किया तो वोह आपको का'बा के अन्दर ले गए और खुद बाहर तशरीफ ले आए तो हज़्रत अ़लीयुल मुर्तज़ा पैदा हुवे । '

(नक़्शबन्दी फी बारह इमाम , सफा-210/211)

(नक़्शबन्दी फी हसब व नसब, सफा - 115)

नीज़ आप आगे लिखते हैं के :

'अ़ली शेरे खुदा का'बा शरीफ में पैदा हुए और का'बा में पैदा होने की खूशूसियत सिर्फ हज़्रत अमीरुलमु'मिनीन अ़ली शेरे खुदा के लिये है ।

• <u>सवाल</u> : का'बा शरीफ में पेदा होने की खुसूसियत सिर्फ हज़्रत अ़ली के लिये है येह दुरस्त नहीं है क्यूंके का'बा में तो आप से पेहले अम्र बिन हिज़ाम की विलादत हुई थी जिससे ज़ाहिर है के का'बा में पैदा होने की तख़्सीस हज़्रत अ़ली के लिये नहीं है ।

• <u>जवाब</u> : हज़्रत अ़ली का का'बा में पैदा होना येह खबर तवातुर से साबित है जैसा के 'इज़ालतुल ख़फा' के हवाला से गुज़रा है । अम्र बिन हिज़ामवाली रिवायत मुतवातिरत से नहीं है नीज़ का'बा में पैदा

होने वाले इस शख़्स के नाम से मुहद्दिष और उलमाए सीरत मुत्तफिक़ नहीं है । बा'ज़ने अम्र बिन हिज़ाम की बजाए हकीम बिन हिज़ाम बताया है । बईन वजह सदूक़ और सिका मुहद्दिषीनने इसका ए'तेबार नहीं किया अगर इसको तस्लीम कर लिया जाए तो अम्र बिन हिजाम का का'बा में पैदा होना उसके लिए बाईसे शरफ नहीं है । चुनान्चे अल्लामा अब्दुलरहेमान सफूरी लिखते हैं :

واما عمرو بن حزام فولدته امه فی اکعبۃ اتفاقاه لا قصدا۔

के अम्र बिन हिज़ाम की मां का अम्र बिन हिज़ाम को का'बा में जन्म देना येह अम्र इत्तेफाक़ी है, क़ासदी नहीं है लेकिन हज़रत अ़ली ﷺ का का'बा में पैदा होना क़ासदी है के येह फज़ीलत खास तौर पर अल्लाह त्आला ने हज़रत अ़ली ﷺ के लिए मख़्सूस कर रखी थी । चुनान्चें लिखते हैं :

أن عليا رضى الله عنه ولدته امه بجوف الكعبة
شرفها الله تعاليٰ وهي فضيلة خصه الله تعاليٰ بها

(नुज़्हातुल मजालिस, जिल्द-02 सफा-205)

अब तसरीह मौजूद है के का'बा में हज़रत अ़ली ﷺ का पैदा होना क़ासदी है ये आप के लिए फज़ीलत और तख़्सीर है जो किसी दूसरे को हासिल नहीं है । अल्लामा शब्लन्जी (वफात सन 1290 हिजरी) अल्लामा नुरुद्दीन अ़ली बिन मुहम्मद अल सब्बाग़ अल मालिकी (वफात सन 855 हिजरी) से नक़ल करते हुवे लिखते हैं के अ़ली बैतुलहरम में जुम'आ के दिन तेरवीं रजब को पैदा हुवे ولم يولد فی البيت الحرام قبلة احد और बैतुल हरम में अ़ली से पेहले कोई पैदा नहीं हुवा, अब इससे जाहिर है के अल्लामा शब्लन्जी के

क़ौल के मुताबिक़ अम्र बिन हिज़ाम वाली रिवायत मो'तबर नहीं है इसीलिये कहा के हज़रत अ़ली के सिवा का'बामें कोई पैदा नहीं हुवा ।'

(नक़्शबन्दी फी बारह इमाम सफा-211/213)

इसी तरह 'क़ासिमे विलायत सय्यिदिना अ़ली ' में रक़मतराज़ हैं :

'ज़ाहिर है के का'बा मुअज़्ज़मा की बडी इज़्ज़त व अज़मत है और येह तय्यिब व ताहिर है, लोगों की नमाज़ के लिए किब्ला है और हज के लिये तवाफ का मक़ाम है इस मुक़द्दस बा-बरकत मक़ाममें अल्लाह त्आला ने अमीरुलमु'मिनीन अ़लीयुल मुर्तज़ा शेरे खुदा को पैदा फरमाया चुनान्चे रिवायत में आता है के जब फातिमा बिन्त असद का'बा के तवाफ में मशरुफ थीं तो............अलख'

(नक़्शबन्दी फी कासिमे विलायत सय्यिदिना अ़ली , सफा-74/75)

56 अल्लामा मुहम्मद इनायतुल्लाह और मौलूदे का'बा

अल्लामा हाफिज़ मुहम्मद इनायतुल्लाह सुन्नी हनफी नक़्शबन्दी मुजद्दिदी नूरी (वफात सन 1432 हिजरी) लिखते है :

'आप की कुनियत 'अबूल हसन' और 'अबू तुराब' लकब असदुल्लाह और मुर्तज़ा है । आप खानदाने सादात के सरताज हैं । औलादे अ़ली आले नबी कहलाई, हुज़ूर की औलाद सय्यिद, इन्हीं की नस्ल से चली । सय्यिदुल अम्बिया, सय्यिदुल औलिया, सय्यिदतुन्निसा, सय्यिदुश्शुहदा ये पन्जतने पाक हक़ है । आप की विलादते पाक का'बा मुअज़्ज़मा में हुई ।'

(इनायतुल्लाह फी नूरुलवर्दा शरह कसीदा अल बुर्दा, सफा-466)

57

अल्लामा गुलाम रसूल सईदी
और
मौलूदे का'बा

शैखुल कुर्आन वल हदीष, शारेह बुखारी व मुस्लिम व मुफ़स्सिरे कुर्आन हज़रत अल्लामा व मौलाना गुलामरसूल सईदी (वफात सन 1437 हिजरी) 'मकालाते सईदी' में सय्यिदिना मौला अ़ली इब्न अबी तालिब का ज़िक्र मुबारक इन अल्फाज़ में फ़रमाते है :

रसूलुल्लाह के मुहिब्बे सादिक़ जिन्हें अल्लाह त्आलाने अपनी मुहब्बत का मुज़्दा दिया, जिन से बुग्ज़ रखना कुफ्र जिन से मुहब्बत करना इमाम....... जो अगर रुठ जाए तो सरकार उन्हें मनाने आए, और इसी आलम में सरकार से अबू तुराब का लकब पाएं, जिस से वोह नाराज़ हो जाएं तो वोह सरकार का म'तूब और जीस से वोह राज़ी हो जाएं वोह सरकार का मेहबूब हो, अन्धेरी रातों में साहिल मुराद तक पहुंचने के लिए जहां आसमान हिदायत के सितारों के बगैर गुज़ारा नहीं वहां इन के सफीना के बग़ैर भी कोई चारा नहीं, वोह पैदा हुवे तो का'बा में, शहादत पाई तो मस्जिद में, जिनकी ज़िन्दगी का मेहवार आग़ाज़ से अन्जाम तक अल्लाह त्आला का घर था ।'

(सईदी फी मक़ालाते सईदी, सफा -218)

- इसी तरह 'ने'मतुल बारी' में है :

'हज़रत अ़ली का मौलूदे का'बा होना......'

(सईदी फी ने'मतुल बारी फी शरह सहीह बुख़ारी जिल्द-06, सफा-784/785)

58 अल्लामा उबैदुल्लाह अमृतसरी
और
मौलूदे का'बा

अल्लामा उबैदुल्लाह अमृतसरी (वफात सन 1437 हिजरी) लिखते हैं :

'आं हज़रत की उम्मुल मु'मिनीन ख़दीजतुलकुब्रा से तीन बरस शादी होने के बा'द आप (मौला अ़ली) ए'न खानाए का'बा बैतुल्लाह शरीफ में तवल्लुद हुवे । उस वक्त आं-हज़रत की उम्र मुबारक अट्ठाइस (28) बरस की थी । '

(उबैदुल्लाह फी अरजउल मतालिब या'नी शीरत अमीरुलमु'मिनीन, सफा-646/647)

59 पीर सय्यिद ख़िज़रहुसैन चिश्ती
और
मौलूदे का'बा

आलमी मुबल्लिगे इस्लाम, मुहक़्क़िक़, मुसन्निफ शाहर हज़रत अल्लामा पीर सय्यिद ख़िज़रहुसैन चिश्ती (वफात सन 1440 हिजरी) 'आले रसूल' में रक़्मतराज़ हैं :

'आप की विलादते बा-सआदत 13 रजबुल मुरज्जब बरोज जुम'अतुल मुबारक, आमुलफील के तीस (30) साल बाद मक्का मुअज़्ज़मामे हुई ।

मुफ़स्सिरे कुर्आन हज़रत अल्लामा सय्यिद अबूल हसनात मुहम्मद अहमद क़ादरी ने अपनी किताब 'औराके ग़म' में साहिबे 'बशाइरुल मुस्तफा' के हवाले से इस तरह बयान फरमाया है के हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (अम्मे रसूलुल्लाह) कबीलाए

बनी अब्दुल उज़्ज़ा के चन्द लोगों के साथ मस्जिदे बैतुल हरम में तशरीफ फरमा थे, के मौला अ़ली की वालिदा फातिमा बिन्त असद मस्जिद में आई, जब वोह मशग़ूले तवाफ हुई तो चौथे चक्कर में चलने की कुव्वत ना रही, दर्दे ज़ेह ने शिद्दत इख़्तियार कर ली, तो आप पुकारी, अय रब्बे का'बा ! इस विलादत को मुज़ पर आसान फरमा !

यक-लख़्त दीवारे का'बा शक़ हुई और फातिमा बिन्त असद का'बा के अन्दर तशरीफ ले गई और हमारी नज़र से ग़ाईब हो गई, फ़रमाते हैं, हमने अन्दरुने का'बा आप को तलाश किया मगर आप ना मिली और चौथे रोज़ आप इसी का'बा से बाहर तशरीफ लाई और हज़रत अ़ली को क़ोद में लिये हुवे थीं ।'

(ख़िज़रहुसैन फी आले रसूल जिल्द -02, सफा-127/128)

• इसी तरह आपकी किताब 'खुल्फाए रसूल' में है ।

(ख़िज़रहुसैन फी खुल्फाए रसूल , सफा-159)

60 शैख़ तु'मा हलबीयुल बुख़्तुरी और मौलूदे का'बा

पन्द्राह सौ (1500) से ज़ाईद अहादीष व अक़्वाल और एक सो तीन (103) फस्लों पर मुश्तमिल शैख तु'मा हलबीयुल बुख़्तुरी की तस्नीफ 'फज़ाइल अ़ली ' का तरजमा मुफ्ती मुहम्मद वसीम अकरमुल क़ादरीने 'शाने मुर्तज़ा ब-ज़बाने मुस्तफा ' नाम से किया है । चुनान्चे इस किताब में मरक़ूम है के :

'हज़रत इमाम ज़ैनुलआबिदीन ने फरमाया : हज़रत फातिमा बिन्त असद को तवाफे का'बा के दौरान बच्चे की विलादत के

आषार नमुदार हुवे, वोह का'बा में दाखिल हुई और वहां अमीरूल मु'मिनीन हज़रत अ़ली की विलादत हुई ।

हज़रत अ़ली 13 रजब जुम'आ के दिन मक्का मुकर्रमा में खानाए का'बा में पैदा हुवे । ना आप से पेहले किसी की खानाए का'बा में विलादत हुई ना आप के बाद और ये एक अैसी फजीलत थी जो के अल्लाह त्आलाने हज़रत अ़ली को अता की ता'के उनकी अज़्मत और उनके मकाम को लोगों के लिये वाज़ेह और रौशन करे ।

अत्ताब बिन असीद से रिवायत है के हज़रत अमीरुलमु'मिनीन, अ़ली इब्न अबी तालिब की विलादत 13 रजब ब-रोज जुम'आ रसूलुल्लाह के 12 साल मब'उष होने से पेहले खानाए का'बा मक्का में हुई ।'

(वसीम अकरम फी शाने अ़ली, ब-ज़बाने नबी, सफा-116/117)

61 हाफिज़ रहमतुल्लाह लखनवी और मौलूदे का'बा

कुदवतुलहुफ्फाज़ फील आफ़ाक़ मौलवी हाफिज रहमतुल्लाह लखनवी 'जामीउल मनाक़िब' में लिखते है :

'विलादत आप की मक्का मुकर्रमा बैतुल्लाह के अन्दर हुई, आप से क़ब्ल कोई मौलूद दरमियाने बैतुल-हरम के नहीं हुवा । तारीखे़ विलादत ब-रोज जुम'आ 13 मुहर्रम या रजब सन 30 में आमुल फील से हैं और हिज्ऱते नबवी से 25 या 27 बरस क़ब्ल ।'

(लखनवी फी जामीउल मनाक़िब, सफा-104)

62 हाफिज मुहम्मद अ़ली हैदर अलवी काकोरवी

और

मौलूदे का'बा

मुहिब्बे अह्लै बैतुन्नबीयुल अरबी मौलवी हाफिज़ मुहम्मद अ़ली हैदर अ़लवी काकोरवी सय्यिदिना मौला अ़ली के 'वाक़ेआ'ते विलादत' में रकम फ़रमाते है :

'हज़रत फातिमा बिन्त असद बयान फरमाती थी के मुद्दते हमल मुन्क़ज़ी हो चुकी थी के एक रोज़ में तवाफे का'बा के लिये गई, तवाफ में मशग़ूल थी के यकायक दर्दे ज़ेह शरु हो गया, आं हज़रत भी उस वक्त तशरीफ रखते थे, मेरी हालते ग़ैर देखकर उन्होंने मुजसे खैरियत पूछी, मैंने बयान किया के दर्दे ज़ेह शुरु हो गया है जिससे मैं बेचैन हूं, आं-हज़रत ने फ़रमाया के जल्द तवाफ ख़त्म करो, मैंने कहा के मुज में इसकी ताक़त नहीं, फ़रमाया : अच्छा का'बा के अन्दर चली जाओ, खुदा मुश्किल आसान करने वाला है । मैं का'बा के अन्दर चली गई वहां अ़ली पैदा हुवे ।'

- नीज आप 'मौलूद शरीफ' के उनवान में लिखते हैं :

'जनाब अमीर खानाए का'बा के अन्दर पैदा हुवे ।'

(काकोरवी फी अहसनुल इन्तिख़ाब फी ज़िक्र म'ईशत सय्यिदिना अबी तुराब, सफा-20/21)

63 अल्लामा मुहम्मद अब्दुलसलाम क़ादरी

और

मौलूदे का'बा

हज़रत अल्लामा मौलाना मुहम्मद अब्दुलसलाम क़ादरी रज़वी शाने आले नुबुव्वत और वाकेआ करबला पर अपनी तस्नीफ

'शहादते नवासाए सय्यिदुल अबरार मनाक़िबे आले नबी अल मुख्तार ﷺ' में लिखते है :

'हज़रत फातिमा बिन्त असद, ज़ौजए इमरान- अबू तालिब ﷺ हामिला थीं और खानाए का'बा में तवाफ की ग़रज़ से आई। दौराने तवाफ दर्दे ज़ेह मेहसूस हुआ और चौथे चक्कर पर आप की हालत जियादा मुतग़य्यर हो गई। आपने अर्ज किया, 'अय अल्लाह ﷻ ! मुज़ पर येह वक्ते विलादत आसान फ़रमा' अचानक का'बा मुअज़्ज़मा की दीवार शक हुई और हज़रत फातिमा बिन्त असद ﷺ अन्दरुने का'बा चली गई, जो अफराद बहार मौजूद थे वोह हैरान हुए के फातिमा बिन्त असद ﷺ कहां चली गई, जब किसी तारीक़ से आपका पता न चल शका तो हुज़ूर सय्यिदे आलम ﷺ से अर्ज़ किया के आपकी मोहतरमा चाची कहां गई ? आप ने फरमाया मुतमईन रहो आ जाएन्गी। उन्होंने बार बार इसरार किया के कहां ? आप ﷺ ने फरमाया जहां भी है आ जाएन्गी, उन्होंने कहा आप ज़ाहिर क्यूं नहीं करते ? आप ﷺ ने फ़रमाया : हुक्मे इलाही नहीं है, चुनान्चे तीन (3) रोज़ का'बातुल्लाह में गुज़ारने के बाद चौथे रोज़ हज़रत फातिमा बिन्त असद ﷺ खानाए का'बा से बाहर तशरीफ लाई तो आपकी गोद में बच्चा था, बच्चे के बाप इमरान अबू तालिब ﷺ ने खुशी से गोद में लिया और प्यार किया और कुछ परेशान हो गए, फौरन उसकी खबर हुज़ूर ﷺ को दी। आप ﷺ तशरीफ लाए और बच्चे को अपनी गोद में ले कर प्यार किया और खुश हुवे। अर्ज़ किया : 'अच्छा तो अल्लाह त्आलाने दिया है मगर आंखे क्यूं बन्द है ?' आप ﷺ ने फ़रमाया : नहीं अब देखो मेरी गोद में इस बच्चे ने दोनों आंखे खोली हुई है और वोह टिक-टिकी लगाकर मुजे देख़ रहा है।' इमरान

अबू तालिब ﷺ बडे खुश हुवे और कहा मेरा गुमान था के ये बच्चा कहीं नाबिना तो नहीं है, अब मेरे दिल को ठंडक हो गई ।' इसके बाद हुज़ूर सय्यिदे आलम ﷺ ने उस बच्चे को गुस्ल दिया । गुस्ल देते हुए आप ﷺ ने फ़रमाया : 'आज इस बच्चे को में गुस्ल दे रहा हूं, हो सकता है के वोह वकत भी आ जाए के यही बच्चा मुज को आखिरी गुस्ल दे ।' कपड़े पहनाकर बच्चे को अपने आगोशे अकदसमे लिया और अपनी ज़बान मुबारक उसके मुंह में डाल दी और मौलूदे का'बा की आंखे मुस्तफा ﷺ की तरफ लगी हुई है ।

रिवायत में आता है के एक मरतबा जवानी के आलम में हुज़ूर सय्यिदे आलम ﷺ ने मुस्कुराते हुवे फ़रमाया : अ़ली ﷺ! मुजे़ येह तो बताओ के जब तुम दुन्या में पैदा हुवे तो उस वक्त तुमने आंखें क्यूं नहीं खोली ? तुम्हारे मां-बाप परेशान हो गए थे और जब मैंने तुमको अपनी गोद में लिया तो तुम्हारी दोनों आंखे खुली थी ।' अर्ज़ किया, हुज़ूर ﷺ ! इसके लिये के मेरी पेहली निगाह रुखे मुस्तफा ﷺ पर पडे ।'

کسے را میسر نہ شد ایں سعادت

بکعبہ ولادت بمسجد شہادت

अल-गरज़ सय्यिदिना अ़लीयुल मुर्तुज़ा की विलादत 22 रजबुल मुरज्जब ब-रोज इतवार के शब बैतुल-हराममें जहरे नुबूव्वत से दस (10) साल क़ब्ल हुई ।'

(अब्दुलसलाम फी शहादते नवासाए सय्यिदुल अबरार मनाक़िबे आले नबी अल मुख्तार, सफा-209/210)

64 सय्यिद सईदुल हसन शाह जिलानी और मौलूदे का'बा

पीर सय्यिद सईदुल हसन शाह जिलानी सज्जादानशीन आस्तानाए आलीया हैदरीया ग़ौषीया रक़म फ़रमाते है :

'अमीरुलमु'मिनीन सय्यिदिना अ़ली ﷺ की विलादत वाक़ेअए फील के तीस (30) साल बाद तेरह रजबुल-मुरज्जब ब-रोज़ जुम'अतुल मुबारक बैतुल्लाह शरीफ के अन्दर हुई ।'

(सईदुल हसन फी खाजीनाए सादात, सफा-136)

65 डॉक्टर मुहम्मद ताहिरुल क़ादरी और मौलूदे का'बा

डोकटर मुहम्मद ताहिरुल क़ादरी अपने एक खिताब में फ़रमाते हैं :

जो स्टेज सेक्रेटरी के फराइज़ अन्जाम दे रहे है, मेरे पास तशरीफ लाए और उन्होंने 'मौलूदे का'बा ﷺ' की याद में मुन्अक़िद होनेवाली मुक़द्दस मेहफिल में हुब्बे अ़ली ﷺ के नाम पर हाज़िरी की दावत दी, तो उनकी दावत सुन कर मैं ने येह सोचा के मेरे मस्लक व मशरब में हुब्बे अ़ली ﷺ के नाम पर दी गई दावत कुबूल करना ए'न ईमान है और हुब्बे अ़ली ﷺ के नाम पर दी गई दावत को रद करना कलिमा पढ़ने के बा-वजूद ए'न मुनाफिक़त है ।'

(ताहिरुल क़ादरी फी हुब्बे अ़ली ﷺ /05)

66 अल्लामा कारी ज़हूर अहमद फैजी और मौलूदे का'बा

फाजिले जलील मुहक़्क़िके अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा कारी ज़हूर अहमद फैज़ी 'शरह खसाइस अ़ली ﷺ' में रक़मतराज़ है :

'बे-शक तवातुर के साथ आया है के हज़रत फातिमा बिन्त असद ﷺ ने हज़रत अ़ली इब्न अबी तालिब ﷺ को का'बा मुकर्रमा के अन्दर जन्म दिया था ।'

(फैज़ी फी शरह खसाइस अ़ली ﷺ सफा-29)

67 मुहक़्क़िके अहले सुन्नत प्रोफेसर खुशरो कासिम और मौलूदे का'बा

प्रोफेसर खुशरो कासिम, आसिस्टन्ट प्रोफेसर मिकेनिकल इन्जनियरिंग डिपार्टमेन्ट, अ़लीगढ मुस्लिम युनिवर्सिटी, लिखते हैं :

'हज़रत अ़ली ﷺ इस दुन्या की वोह वाहिद खुशक़िस्मततरीन हस्ती है जिनकी विलादत भी खानाए का'बा में हुई और शहादत भी मस्जिद में हुई । किसी शाइरने क्या खूब कहा है :

'जो का'बा में हो पैदा और शहादत पाए मस्जिद में
खुदा के घर का वारिस वोह बशर यूं भी है और यूं भी है'

(खुशरो क़ासिम फी मक्तलुल इमाम अमीरुलमु'मिनीन अ़ली इब्न अबी तालिब ﷺ सफा-07)

68 डॉक्टर अली मुहम्मद मुहम्मद सल्लाबी और मौलूदे का'बा

अस्रे हाज़िर के मशहूर सलफी आलिम डॉक्टर अ़ली मुहम्मद मुहम्मद अस्सलाबी अपनी तस्नीफ़ 'अस्माउल मतालिब' में लिखते हैं :

'बनू हाशिम में अ़ली ﷺ सबसे पेहले ऐसे शख़्स है जो खानाए का'बा में पैदा हुवे और इमाम हाकिम ने लिखा है के बे-शुमार अख़्बार व आषार दलालत करते है के अ़ली ﷺ खानाए का'बा में पैदा हुवे ।'

(सलाबी फी अस्माउल मतालिब फी सीरत अमीरुलमु'मिनीन अ़ली इब्न अबी तालिब, जिल्द-01, सफा-29)

69 साहिबज़ादा पीर मुहम्मद मक़्बूल अहमद सरवर और मौलूदे का'बा

शैखुल कुर्आन खतीबे पाकिस्तान हज़रत अल्लामा मौलाना साहिबज़ादा पीर मुहम्मद मक़्बूल अहमद सरवर 'मनाक़िबे सय्यिदिना अ़लीयुल मुर्तज़ा' में रकमतराज हैं :

'बोहत से अक़ाबिरीनने हज़रत शेरेखुदा, ताजदारे अह्ले अता, मौला अ़लीयुल मुर्तज़ा ﷺ की विलादते बा-सआदत का का'बातुल्लाह में वाकेअ होना रक़्म फरमाया है ।'

(मक़्बूल अहमद फी मनाक़िबे सय्यिदिना अ़लीयुल मुर्तज़ा, सफा-53)

70 उर्दू दाइराए म'आरिफे इस्लामिय्या और मौलूदे का'बा

शो'बा उर्दू दाइराए म'आरिफे इस्लामीया पन्जाब युनिवर्सिटी, लाहौर से शा'एकर्दा 'उर्दू दाइराए म'आरिफे इस्लामीया' में सय्यिदिना मौला अ़ली के तजकिरा में लिखा हैं :

'विलादत : 13 रजब, 30 आमुल-फील/ 600 ईसवी में फातिमा बिन्त असद बिन हाशिम बिन अब्द मुनाफ बिन कुसय के बतन से, खानाए का'बा के अन्दर हुई ।'

(उर्दू दाइराए म'आरिफे इस्लामीया 14/02/47)

71 सय्यिद मुर्तज़ा अमीन नक़्शबन्दी मुजद्दिदी और मौलूदे का'बा

सहिबज़ादा पीर सय्यिद मुर्तज़ा अमीन हनफी नक़्शबन्दी मुजद्दिदी सज्जादानशीन आस्तानाए आलीया आलूमहार शरीफ अपनी तस्नीफ 'अ़ली म'अल हक' में फ़रमाते हैं :

'उस हैदरे कर्रार की शान को बयान करता इस ना-चीज की इस्तेता'अत से बहार है । क्यूं के खुदाए रब्बुलइज्जतने आपकी विलादते बा-सआदत के लिए अपना घर या'नी खानाए का'बा की दीवार तोडकर

लिखनेवालों के कलम तोड दिये है । अल्लाह रब्बुलइज्जत का घर जिसका जच्चाखाना बना हो, उसकी शान व अज़्मत तो सिर्फ वोह रब खुद ही बयान कर सकता है और वोह परवरदिगार जिसने आपकी विलादते बा-सआदत के साथ ही आपके मुन्किरों को भी आप ﷺ की बुजुर्गी व बरतरी का ए'तिराफ करने पर मजबूर कर दिया के आज भी लाखों फरज़न्दाने तौहीद ख्वाह किसी मस्लक से ताल्लुक रखते हो जच्चाखानाए अ़ली ﷺ का तवाफ करते हुवे नज़र आऐंगे ब-कौल शाइर :

मुहज़्ज़ था, मुक़द्दस था, मगर पेहले ना था - क़िब्ला,
अ़लीؓ पैदा हुए का'बा में फिर का'बा बना - क़िब्ला,
येह तारीखी हक़ीक़त है जो बदली है ना - बदलेगी,
अ़लीؓ का जो भी दुश्मन है बना लें - दुसरा क़िब्ला ।'

(मुर्तज़ा अमीन फी अ़ली म'अल हक, सफा-30/31)

72 प्रोफेसर मुफ्ती मुनीबुर्रहमान और मौलूदे का'बा

मुफ्तीए आज़म पाकिस्तान अल्लामा मुनीबुर्रहमान साहिब 'तफहीमुल मसाइल' में रकमतराज हैं :

'हज़रत अ़ली ﷺ के इस्लाम में बेशुमार फजाइल हैं, तमाम अहले इमान की उनसे इन्तेहाई अक़ीदत और मुहब्बत है और हज़रत अ़ली ﷺ की विलादते मुबारका का'बा में हुई, ऐसी रिवायत मौजूद है और येह एहदे जाहिलिय्यत या'नी ज़माना'ए क़ब्ल अब इस्लाम का वाक़ेआ है ।' (मुनीबुर्रहमान फी तफहीमुल मसाइल, जिल्द-06, सफा 47)

73 साहिबजादा मुहिब्बुल्लाह नूरी और मौलूदे का'बा

फ़क़हे आज़म अबूल खै़र मुहम्मद नूरुल्लाह बसीरपूरी के फरज़न्द अल्लामा मुहम्मद मुहिब्बुल्लाह नूरी लिखते हैं :

'फातिमा बिन्त असद ﷺ बाहर निकलकर खानाए का'बा के तवाफ में मशग़ूल हो जाती है, दो-तीन चक्कर अभी बाक़ी थे के दर्दे ज़ेह की शिद्दत के बाइस तवाफ रोककर का'बा के अन्दर दाखिल हो गई और फिर वहां वोह बच्चा पैदा हुवा.....

'बना इस वास्ते अल्लाह ﷻ का घर जा'ए- पैदाईश,
के वोह इस्लाम का का'बा है, ये इमान का का'बा

का'बा में पैदा होनेवाला बच्चा वोह था, जो बाद में सरखइले औलिया और अहले तसव्वुफ का पेशवा बना, जिसे का'एनात आज अबूल हसन, हैदरे कर्रार और अ़लीयुल मुर्तज़ा के नामसे याद करती है....'

(नूरी फी मुर्तज़ा, मुश्किल कुशा, मौला अ़ली, सफा-39)

74 हाफिज़ ज़हीर अहमद अल इस्नादी और मौलूदे का'बा

फरीदे मिल्लत रिसर्च इन्स्टिटयूट के रिसर्च स्कोलर हाफिज़ जहीर अहमद अल इस्नादी सय्यिदिना मौला अ़ली का 'मौलूदे का'बा और शहीदे मस्जिद' होना ज़िक्र फ़रमाते है :

'मौलाए का'एनात अबू तुराब सय्यिदिना अ़ली की जाते अकदस किसी त'आरुफ की मोहताज नहीं बल्कि खुद त'आरुफ आप का मोहताज है, अ़ली वोह जो दरयाए मारेफत का शनावार, किताबे हक़ का मुफ़स्सिर, इल्मे इलाही का अमीन, नफ्से रसूल, ज़ौजे बतूल, अबूल-हसन और अबूल-हुसैन, नबी का राजदान, वसीए रसूल , बाबे मदीनतुल इल्म, गाज़ीए बद्र व हुनैन, फ़ातेहे खै़बर, इमामुल औलिया वल सुलहा, इमामुल षक़लैन, काइदुल मुत्तकीन और अमीरुलमु'मिनीन वल मुस्लिमीन है, अ़ली मौलूदे का'बा, शहीदे मस्जिद और आयाए-रहमत और सायाए बरकत व राफत है ।'

(ताहिरुल क़ादरी फी हुस्नुल म'आब फी ज़िक्री अबी तुराब , सफा-05)

75 प्रोफेसर डॉक्टर अ़ली मुहम्मद चौधरी और मौलूदे का'बा

प्रोफेसर डोक्टर अ़ली मुहम्मद चौधरी किताब 'बाबे इल्मे नबी' में लिखते है :

आप ﷺ की वालिदा माजिदा हज़्रत फातिमा बिन्त असद फरमाती है के में तवाफे का'बा में मशगूल थी, अभी मैं तीसरे चक्कर में थी के मुजे़ दर्दे जे़ह मेहसूस होने लगा । नबी करीम ﷺ ने मेरे चेहरे के तग़य्युर से मुजे़ पेहचाना और फ़रमाया के 'क्या बात है ?' मैंने शर्म मेहसूस की और अस्ल सूरते हाल अर्ज कर दी । आप ﷺ ने फ़रमाया के 'क्या तवाफ पुरा कर चुकी हो ?' मैंने अर्ज किया के 'नहीं', फ़रमाया के 'तवाफ पुरा कर लो' अगर इस दौरान दर्द ज़ियादा बढ जाये तो खानाए-का'बा के अन्दर चली जाना इसमें कोई हिकमते इलाही है ।' चौथे चक्कर में दर्द ज़ियादा बढ जाने पर हज़्रत फातिमा बिन्त असद رضی اللہ عنہا खानाए का'बा के अन्दर तशरीफ ले गई । फिर जब का'बा शरीफ से बाहर आई तो आप رضی اللہ عنہا की गोद में मौलूदे का'बा सय्यिदिना अ़ली ﷺ थे ।'

(अ़ली मुहम्मद फी बाबे इल्मे नबी ﷺ सफा-28)

76 सय्यिद सिब्त सिकन्दर नक़्शबन्दी देवबंदी और मौलूदे का'बा

जनाब सय्यिद सिब्त सिकन्दर नकवी हनफी नक़्शबन्दी देवबंदी अपनी तालीफ 'सीरते अमीरुलमु'मिनीन सय्यिदिना अ़लीयुल मुर्तज़ा ؓ' में लिखते है :

'हज़रत फातिमा बिन्त असद ؓ को दर्दे ज़ेह की शिद्दत महसूस हुई और बोहत ज़ियादा परेशान हुई तो जनाब अबू तालिब, उनको खानाए का'बा में ले गई, थोडी देर में एक हसीन व जमील लडके की विलादत हुई ।'

(सिकन्दर फी सीरते अमीरुलमु'मिनीन सय्यिदिना अ़लीयुल मुर्तज़ा ؓ सफा-60)

77 हाफिज कारी गुलामहसन क़ादरी और मौलूदे का'बा

हाफिज़ कारी गुलामहसन क़ादरी, मुफ्तीए दारूलउलूम, हिज़्बुल-अहनाफ, लाहोर लिखते है :

'हज़रत अ़लीयुल मुर्तज़ा ؓ की जिस तरह शहादत बे-मिषाल है आप ؓ की विलादत भी बडे अजीब तरीके से हुई और वोह इस तरह के आपकी वालिदा माजिदा हज़रत फातिमा बिन्त असद ؓ खाना'ए का'बा के तवाफ में मशरूफ थीं, तवाफ करने वालों का जम्मे गफीर था के हज़रत फातिमा बिन्त असद ؓ को दर्दे जेह शरु हुवा, आप गभरा गई के क्या करुं ? अपने घर तो जा नहीं सकती और

यहां लोगों का हुजूम है । अचानक दीवारे का'बा फटी और एक गैबी निदा आई के गभराने की ज़रुरत नहीं अगर अपने घर नहीं जा सकती तो हमारे घरमें आजा ।'

'आमदे अ़ली से का'बा की कायापलट गई,
अैसा खुशी से फुला के दीवार फट गई ।'

- एक हदीष शरीफ में है :

الناس من شجرة شتى وانا وعلى من شجرة واحد

'तमाम लोग मुख़्तलिफ दरख़्तों से हैं और
मैं और अ़ली एक ही (नूरानी) दरख़्त से हैं ।'

(तारीखुल खुल्फा ब-हवाला तबरानी सफा-120)

या'नी वोह नबी का नूर इकठ्ठा हो चला आगे आकर नबी हज़रत आमिना व अब्दुल्लाह की तरफ आ गए और अ़लीयुल मुर्तज़ा अबू तालिब व फातिमा बिन्त असद की तरफ आ गए और जब आलमे बशरीयत का ज़हूर हुवा तो हुजूर हज़रत अब्दुल्लाह के घर आए और अ़ली अल्लाह के घर आ गए । जब हम का'बे जाते है तो सिर्फ अल्लाह के घर जाते है और अ़ली का'बे जाते है तो बैतुल्लाह भी जाते है और अपनी जा'ए विलादत पर भी जाते है ।'

(गुलाम हसन फी याराने मुस्तफा वारिषाने खिलाफते राशिदा, सफा-460/461)

78 अल्लामा सिराज अहमद क़ादरी और मौलूदे का'बा

अल्लामा सिराज अहमद सिराजुलक़ादरी लिखते हैं :

'सवाल : दुन्या का वो कौनसा इन्सान है जिसकी विलादत खानाए का'बा में हुई ?

जवाब : 'हज़रत अ़ली ﷺ'

(सिराज अहमद फी इस्लामी मा'लूमात का इन्साईक्लोपिडिया, सफा-275)

79 साहिबज़ादा इरफान इलाही क़ादरी और मौलूदे का'बा

अल्लामा साहिबजादा इरफान इलाही क़ादरी अपनी तालिफ 'खसाइसे अह्ले बैत' में रकमतराज हैं :

'मौलाए का'एनात हज़रत अ़लीयुल मुर्तज़ा ﷺ की वालिदा माजिदा हज़रत फातिमा बिन्त असद ﷺ तवाफे का'बा में मशरुफ थीं । तवाफ करनेवालो का जम्मे गफीर था के फातिमा बिन्त असद ﷺ को दर्दे ज़ेह शुरु हुवा, आप ﷺ गभरा गई के क्यां करुं ? अपने घर तो जा नहीं सकती और यहां लोगो का हुजूम है, अचानक दीवारे का'बा फटी और निदाए गैबी आई के गभराने की जरुरत नहीं अगर अपने घर नहीं जा सकती तो हमारे घर में आ जा ।' अैसी हालतमें कोई भी औरत किसी भी मस्जिद के करीब नहीं जा सकती बल्के बीबी मरयम ﷺ को हुक्म हुवा के हज़रत इसा ﷺ की पैदाइश होनेवाली है, बैतुल मुक़द्दस से जरा दूर चली जा और हज़रत अ़ली ﷺ की वालिदा को

का'बे के अन्दर बुलाया गया । शायद यही वजह है के सहाबाए किराम रज़ि. में से हुजूर सल्ल. ने सिर्फ हज़रत अ़ली अलै. को ही हालते जनाबत में मस्जिद से आने (गुजरने) की इजाजत दी के जिसकी मां हालते निफास में का'बा के अन्दर जा सकती है । उसका बेटा हालते जनाबत में मस्जिद के अन्दर क्यों नहीं आ सकता ।

यहां हम एक काबिले गौर नुकता अर्ज़ करना चाहते है के आम ज़मीन से मीक़ान की जमीन अफजल है क्यों के उससे आगे बगैर एहराम के नहीं, जा सकते फिर मीक़ात से हरम अफ़ज़ल है के वहां कोई गैर मुस्लिम नहीं जा सकता । फिर हरमे मक्का से शेहरे मक्का अफ़ज़ल है के खुदाने उसकी याद फरमाई है, फिर शेहरे मक्का से मस्जिद की सरजमीन अफ़ज़ल है के जहां एक नमाज़ का सवाब एक लाख नमाज़ के बराबर है फिर उस खानाए का'बा के इर्द-गिर्द की जगह जहां तवाफ किया जाता है । फिर उससे का'बातुल्लाह की इमारतवाली ज़मीन अफज़ल है, जो बैते'अतीक़ है और सारे जहांनो के लिये हिदायत है और का'बा शरीफ के अन्दर हज़रत अ़ली अलै. की विलादत हुई ।

- और दूसरे अल्फ़ाज़ में यूं मुलाहजा फरमायें :

मौला भी मोहतरम है विला भी है मोहतरम,
का'बा है और जा'ए विलादते अ़ली अलै. भी है,
का'बा से इब्तेदा है तो मस्जिद पे इन्तेहा,
मरकूम दो हरममें हिकायत अ़ली अलै. की है ।

- शहेनशाहे विलायत की मुहब्बत और तवाफे, का'बा के बारे में

'जिसे अ़ली अलै. की विलायत का ए'तेराफ नहीं,
हजार सजदे कर कोई गुनाह मुआफ नही,
बदन पर हज का एहराम दिल में बुग्जे अ़ली,
येह का'बाए पाक के फेरे तो है तवाफ नहीं ।'

(इरफान इलाही फी खसाइसे अह्ले बैत, सफा-65/66)

80 सय्यिद मुहम्मद सईदुल हसन शाह और मौलूदे का'बा

हुज़ूर नबीए करीम ﷺ के रिश्तेदारों और अ'इज़्ज़ा व अक़ारिब के अहवाल के बयान पर मुश्तमिल सय्यिद मुहम्मद सईदुल हसन शाह अपनी तालीफ 'ख़ानदाने मुस्तफा ﷺ' में लिखते हैं :

'आप رضي الله عنه की विलादते मुबारक का वाक़ेआ कुतुबे सीरत में यूं मरक़ूम है : आप رضي الله عنه की वालिदा माजिदा हज़्रत फातिमा बिन्त असद رضي الله عنها फरमाती है के मैं विलादते अ़लीयुल मुर्तज़ा رضي الله عنه से पेहले तवाफ़े का'बा में मशग़ूल थी । अभी तवाफ के तीन चक्कर ही मुकम्मल हुवे थे के दर्दे ज़ेह महसूस होने लगा । हुज़ूर सय्यिद यौमुल नुशूर ﷺ ने मेरे चेहरे के तग़य्युर से मुजे़ पहचाना और फ़रमाया : 'क्या बात है ? में आपके चेहरे पर कर्ब के अषारात मेहसूस कर रहां हूं' मैं ने हिचकिचाते हुवे अस्ल सुरते हाल अर्ज़ कर दी, तो फरमाया : 'क्या आप तवाफ पूरा कर चुकीं है ?' मैंने अर्ज़ किया, 'नहीं !' तो आप ﷺ ने इरशाद फरमाया : 'तवाफ पूरा कर लो, अगर इस दौरान दर्द बढ जाए, तो खानाए का'बा के अन्दर चली जाना, उसमें कोई हिकमते इलाही है ।'

मरक़ूम है के चौथे चक्कर में दर्दे जेह बळह जाने पर हज़्रत फातिमा बिन्त असर رضي الله عنها का'बा के अन्दर तशरीफ ले गई और फिर जब का'बातुल्लाह से बाहर आई तो उनकी गोद मुबारक में हज़्रत सय्यिदिना अ़लीयुल मुर्तज़ा رضي الله عنه थे ।'

(सईदुल हसन शाह फी खानदाने मुस्तफा ﷺ, सफा-117)

81 सय्यिद मुख़्तार अ़ली मदारी और मौलूदे का'बा

सय्यिद मुख़्तार अ़ली वक़ारी मदारी दीवान, आस्तानाए कुत्बुल मदार अपनी तस्नीफ 'फज़ाइले अह्ले बैते अत्हार व इरफाने कुत्बुल मदार' में लिखते हैं :

'आप (सय्यिदिना अ़ली ﷺ) की पैदाइश अन्दरुने का'बा हुई ।'

(मुख़्तार अ़ली फी फज़ाइले अह्ले बैते अत्हार व इरफाने कुत्बुल मदार, सफा-20)

82 सख़ी सुल्तान नजीबुर्रहमान और मौलूदे का'बा

ख़ादिमे सुल्तानुल फक्र हज़रत सख़ी सुल्तान मुहम्मद नजीबुर्रहमान लिखते हैं :

'अमीरुलमु'मिनीन, इमामुल मुत्तक़ीन, मुश्किलकुशा, शेरे खुदा, इमामे आरिफीन, ताजदारे औलिया, असदुल्लाह गालिब, मौलूदे का'बा, रफीक़े पैगम्बर, दामादे रसूल ﷺ, फातेहे ख़ैबर, ज़ौजे बतूल ﷺ, हसनैन करीमैन ﷺ के वालिद, अबूल हसन और अबू तुराब हज़रत अ़ली ﷺ 30 आमुल फील के पैदा हुवे । एक और रिवायत के मुताबिक आप 12 या 13 रजब ब-रोज जुम'अतुल मुबारक पैदा हुवे । उस वक़्त हुज़ूर ﷺ की उम्र मुबारक तीस (30) बरस थीं ।'

(नजीबुर्रहमान फी खुलफाए राशिदीन ﷺ, सफा-147)

83 तज़्किरा'ए सादाते बुख़ारिया और मौलूदे का'बा

बुख़ारी व नक़वी सादात के अक़ाबिरीन के तज़्किरा म'अश्शजरात पर किताब 'तज़्किरा'ए सादाते बुख़ारीया' में अल्लामा सफदर रिज़ा क़ादरी साहिब मौला अ़ली ﷺ की विलादत पर लिखते हैं :

'जा'ए विलादत : बैतुल्लाह शरीफ (मक्का मुकर्रमा)

(सफदर रिज़ा फी तज़्किरा'ए सादाते बुख़ारीया, सफा-119)

84 पीर बदरे आलम अहमद अ़ली बुख़ारी और मौलूदे का'बा

पीरे तरीकत रेहबरे शरीअत हज़रत सय्यिद पीर बदरेआलम अहमद अ़ली बुख़ारी मौला अ़ली ﷺ की 'साले विलादत और मकामे विलादत' में लिखते हैं :

'हज़रत अ़ली ﷺ बे'षते नबवी से दस साल पेहले पैदा हुवे, आप ﷺ की वालिदा माजिदा का'बा शरीफ की ज़ियारत के लिये गई थीं वहीं आप ﷺ की विलादत हुई ।'

(बदरेआलम फी विराषते रसूलुल्लाह ﷺ मौला अ़ली ﷺ व औलाद, सफा-31)

85 अल्लामा तुफ़ैल अहमद हज्वेरी और मौलूदे का'बा

अल्लामा पीर मुहम्मद तुफ़ैल अहमद क़ादरी हज्वेरी अपनी किताब में ज़ेरे इन्तेसाब लिखते हैं :

'मैं अपनी इस काविश को आक़ाए दो-जहां, मालिके कौनो-मकां, मेहबूबे खुदा ﷺ और अह्ले बैते अत्हार ؑ मौलूदे का'बा इमामुल औलिया, अबू शोहदा, अबू सादात, मौलाए क़ा'एनात हज़रत अ़लीयुल मुर्तज़ा ؓ के वालिदे गिरामी, पेहरेदारे रसूलुल्लाह ﷺ के नाम करता हूं । '

(तुफ़ैल अहमद फी क़श्फुल हक़ाइक़, इन्तेसाब)

86 मौलाना अबू अहमद गुलाम हसन उवैसी क़ादरी और मौलूदे का'बा

मौलाना अबू अहमद गुलाम हसन उवैसी क़ादरी 'फैज़ाने हैदरी ؓ' में लिखते हैं :

'हज़रत अ़ली ؓ शिकमे मादर से जौफे का'बा में पैदा हुवे थे चुनान्चे येह फज़ीलत खुदा त्आला ने खास कर आप ؓ के हिस्से में की थी ।'

(उवैसी फी शरह दीवाने अली ؓ, सफा-36)

87 मौलाना गुलाम मुस्तफा सिद्दीक़ी और मौलूदे का'बा

मौलाना अबू राजा गुलाम मुस्तफा सिद्दीक़ीयुल मदनी साबिक सीनीयर मुदर्रिस जमीयतुल मदीना करांची शरह क़सीदा बुर्दह में लिखते हैं :

'खलीफाए चहारुम, जा-नशीने रसूल ﷺ व ज़ौजे बतूल رضي الله عنها, हज़रत अ़ली इब्ने अबी तालिब رضي الله عنه की कुन्यत 'अबूल हसन' और 'अबू तुराब' है। आप हुज़ूरे अकदस ﷺ के चचा अबू तालिब رضي الله عنه के फरज़न्दे अर्जुमन्द है। आमुल-फील के तीस (30) बरस बाद जब के हुज़ूरे अकरम ﷺ की उम्र शरीफ तीस (30) बरस की थी, रजब को जुम'आ के दिन हज़रत अ़ली عليه السلام खाना'ए का'बा के अन्दर पैदा हुवे। आप عليه السلام की वालिदा माजिदा का नाम हज़रत फातिमा बिन्त असद رضي الله عنها हैं।'

(गुलाम मुस्तफा फी निशाने मुज़्दा शरह कसीदा बुरदह, सफा-236/237)

88 मुहम्मद मन्ज़र मुस्तफा नाज़ अशरफी और मौलूदे का'बा

मौलाना हाफिज़ व कारी मुहम्मद मन्ज़र मुस्तफा नाज़ अशरफी 'शाने अ़ली عليه السلام (कुरआन व हदीष की रोशनी में)' में लिखते हैं :

'हज़रत अ़ली عليه السلام की विलादत 13 रजबुल मुरज्जब ब-रोज जुम'आ ए'लाने नुबुव्वत से दस (10) साल क़ब्ल खानाए का'बा में हुई।'

(अशरफी फी शाने अ़ली عليه السلام, सफा-19)

89 अल्लामा इफ्तिखार अहमद और मौलूदे का'बा

अल्लामा इफ्तिख़ार अहमद हाफिज़ क़ादरी ने किताब 'शाने अ़ली ﷺ ब ज़बाने नबी ﷺ' में सय्यिद आरिफ महजूर रिज़्वी गुजराती की मौलाए का'एनात अमीरुलमु'मिनीन सय्यिदिना अ़ली इब्न अबी तालिब ﷺ की शान में एक मन्क़बत पेश की है, जिस में आप फ़रमाते है :

'वोह जिस तरफ हूं हक़ हो वाजेह उसी तरफ,
साबित अलल-ए'लान है मौला अ़ली ﷺ की शान,
मौलूदे का'बा आप है अल-हक़्क़ व बिल-यक़ीन,
जुहला'ए बस शैतान है मौला अ़ली ﷺ की शान,
उनसा जरी ना कोई भी पैदा हुवा कहीं,
खैबर-शिकन निशान है मौला अ़ली ﷺ की शान,
शेरे खुदा बस एक ही दुन्या को मिल सका,
यकताई की उडान है मौला अ़ली ﷺ की शान ।'

(इफ्तिखार अहमद फी शाने अ़ली ﷺ ब-जबाने नबी ﷺ, सफा-157)

90 मौलाना चिरयाकोटी और मौलूदे का'बा

मौलाना मुहम्मद अफरोज़ क़ादरी चिरयाकोटी लिखते हैं :

'जनाब फातिमा बिन्त असद ﷺ खानाए का'बा का तवाफ कर रही थी के वाज़'ए हमल के आषार ज़ाहिर हुवे । इसी वकत खानाए का'बा का दरवाज़ा खुला और जनाबे फातिमा बिन्त असद ﷺ का'बा के अन्दर दाखिल हो गई । पिर क्या हुवा के उसी जगह खाना'ए का'बा के अन्दर हज़रत अ़ली ﷺ की विलादत हुई ।'

(अफरोज़ क़ादरी फी तवाफे खाना'ए का'बा के रुहपरवर वाके'आत, सफा-63)

91 मुहम्मद अब्दुल खालिक़ तवक्कुली और मौलूदे का'बा

रिटायर्ड सीनियर सब्जेक्ट स्पेश्यालिस्ट गवर्नमेन्ट कोलेज बरा'ए तरबीयती असातिज़ा फैसलाबादी मुहम्मद अब्दुलखालिक़ तवक्कुली लिखते हैं :

' अरब के क़बाइल तवाफे का'बामें लगे थे उनमें हज़रत अ़ली ﷺ की वालिदा माजिदा भी थीं आषारे विलादत पैदा हो गए दर्दे ज़ेह शुरु हुवा । का'बातुल्लाह की दीवार फट गई आवाज़ आई, 'अय फातिमा ﷺ! का'बा के अन्दर आ जा' अन्दर चली गई वहीं पैदाइश हुई । इसीलिये हज़रत अ़ली ﷺ को मौलूदे का'बा कहा जाता है ।'

(अब्दुलखालिक़ फी हज़रत सय्यिदिना अ़लीयुल मुर्तज़ा ﷺ, सफा-30)

92 अहमद हसन क़ादरी और मौलूदे का'बा

सुल्तानुल फुक़रा हज़रत सूफी गुलाम मुहम्मद क़ादरी की ज़ेरे सरपरस्ती में अहमद हसन क़ादरी साहिब अपनी किताब 'बारह इमाम' में लिखते हैं :

'तमाम आलमे इस्लाम में सिर्फ हज़रत अ़ली ﷺ वोह वाहिद हस्ती हैं जिनकी विलादते बा-सआदत का'बतुल्लाह के अन्दर हुई और सबब इस बात का येह बना के आप ﷺ की वालिदा हज़रत अबू तालिब ﷺ के हमराह का'बतुल्लाह के तवाफ में मशग़ूल थीं के

अचानक शिद्दत के साथ दर्दे ज़ेह लाहिक़ हुवा । दर्द इतना शदीद था के कहीं ओर ले जाने का वक़्त ना मिला । हज़रत अबू तालिब ﷺ अपनी एहलिया फातिमा बिन्त असद ﷺ को का'बतुल्लाह के अन्दर ले आए और वहीं हज़रत अ़ली ﷺ की विलादत हुई

بہ کعبہ ولادت بہ مسجد شہادت کسے را میسر نہ شد ایں سعادت

हुज़ूरे अक़्दस ﷺ को हज़रत अ़ली ﷺ की विलादत की खबर दी गई । आप ﷺ भाई को देखने के लिये आए तो आप ﷺ की चाची ने त'आस्सुफ से फ़रमाया के तुम्हारा भाई शायद पैदाइशी तौर पर नाबीना है के जबसे पैदा हुवा है उसने आंखे नहीं खोलीं । हुज़ूर ﷺ ने अ़ली ﷺ को गोद में लिया । हज़रत अ़ली ﷺ ने हुज़ूर ﷺ की गोद में आंखे खोली और दुन्या में आने के बाद सबसे पेहले रुखे मुस्तफा ﷺ पर निगाह डाली । दुन्या में सबसे पेहले हुज़ूर ﷺ की ज़ियारत का शर्फ, सिर्फ आप ﷺ का ही इम्तियाज़ है जो किसी और को नसीब ना हुवा ।' (अहमद हसन फी बारह इमाम, सफा-19/20)

93 अल्लामा अबू तुराब और मौलूदे का'बा

अल्लामा अबू तुराब मुहम्मद नसिरुद्दीन नसीरूल मदनी अत्तारी अपनी किताब 'तज़्किराए खानदाने नुबूव्वत' में रक़मतराज़ हैं :

'आप (मौला अ़ली ﷺ) 30 आ'मुल-फील, 13 रजबुल मुरज्जब को ब-रोज जुम'अतुल मुबारक़ खाना'ए का'बा के अन्दर पैदा हुवे उस वक़्त हुज़ूर ﷺ की उम्र मुबारक़ तक़रीबन 30 बरस थीं ।'

(अबू तुराब फी तज़्किराए खानदाने नुबूव्वत, सफा-174)

94 मुहम्मद मुजाहिद अत्तारी और मौलूदे का'बा

मौलाना अब्दुल मुस्तफा मुहम्मद मुजाहिदुल अत्तारीयुल क़ादरी 'खानदाने-रसूल ﷺ' में लिखते हैं :

'हैदरे कर्रार हज़रत सय्यिदिना अ़ली इब्ने अबी तालिब ؓ आमुल फील के तीस 30 बरस बाद 13 रजबुल-मुरज्जब को खानाए का'बा में पैदा हुवे ।'

(मुहम्मद मुजाहिद फी खानदाने रसूल ﷺ, सफा-449)

95 मुहम्मद अशरफ शरीफ व डॉक्टर इश्तियाक़ अहमद और मौलूदे का'बा

मुहम्मद अशरफ शरीफ और डोक्टर इश्तियाक़ अहमद अपनी किताब 'नबी करीम ﷺ के अज़ीज़ व अक़ारिब' में लिखते हैं :

'आप ؓ खाना'ए का'बा में पैदा हुवे और मस्जिद में अपने रब से जा मिलें ।'

(नबी करीम ﷺ के अज़ीज़ व अक़ारिब, सफा-328)

96

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी और मौलूदे का'बा

बानी'ए दा'वते इस्लामी मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी रज़वी बरेल्वी अपने रिसाला में लिखते हैं के :

'खलीफ़ा'ए चहारुम, जा-नशीने रसूल ﷺ, ज़ौजे बतूल ﷺ, हज़रते सय्यिदिना अ़ली इब्न अबी तालिब ﷺ की कुनियत 'अबू हसन' और 'अबू तुराब' है । आप ﷺ शहेनशाहे अबरार, मक्के-मदीने के ताजदार ﷺ के चचा अबू तालिब ﷺ के फरज़न्दे अर्जुमन्द हैं । आमुल - फील के तीस (30) साल बाद (जब हुज़ूर नबी करीम ﷺ की उम्र शरीफ 30 बरस थी) 13 रजबुल-मुरज्जब ब-रोज़ जुम'अतुल-मुबारक हज़रत सय्यिदिना अ़लीयुल मुर्तज़ा ﷺ, शेरे खुदा ﷺ खाना'ए का'बा शरीफ ज़ादहा अल्लाहु शरफन व ता'ज़ीमन के अन्दर पैदा हुवे ।'

(इल्यास अत्तार फी करामाते शेरे खुदा ﷺ, सफा-11/12)

97

जनाब अक़ील अहमद और मौलूदे का'बा

जनाब अक़ील अहमद अपनी मुख्तसर किताब 'मनाक़िबे अ़ली ﷺ' जिसकी तक़रीज़ पीर सय्यिद मीर तय्यिब अ़ली शाह और हज़रत अल्लामा मुफ्ती अहमदयार खान नईमी ने लिखी है, में आप लिखते हैं :

'आप हुज़ूरे अक़दस ﷺ के चचा अबू तालिब ﷺ के फरज़न्द

हैं, आमुल फील के तीस (30) बरस बाद जब के हुज़ूरे करीम ﷺ की उम्र मुबारक तीस बरस थी जुम'आ के दिन हज़रत अ़ली رضي الله عنه ख़ाना'ए का'बा के अन्दर पैदा हुवे ।'

(अक़ील अहमद फी मनाक़िबे अ़ली رضي الله عنه, सफा-08)

98 सय्यिद इफ्तिख़ारुल हसन ज़ैदी और मौलूदे का'बा

साहिबज़ादा सय्यिद इफ्तिखारुल हसन ज़ैदी वाकेअ'ए विलादते मौला अ़ली رضي الله عنه बयान करते हुवे आखिर में लिखते हैं :

'चुनान्चे आप (सय्यिदा फातिमा बिन्त असद رضي الله عنها) का'बा के अन्दर चली गई और फिर अमीरुलमु'मिनीन हज़रत अ़लीयुल मुर्तज़ा رضي الله عنه की विलादते बा-सआदत खानाए का'बा में हुई ।

کسے رامیسر نہ شد ایں سعادت
بکعبہ ولادت بمسجد شہادت

के क़ियामत तक कोई मां अब ऐसा फरज़न्द नहीं जनेगी जो पैदा का'बा में हो और शहीद मस्जिद में ।'

(इफ्तिखारुल हसन फी ख़ाक़े करबला, सफा-32)

इसी तरह कई मुस्तनद व मो'तमद उलमा'ए अह्ले सुन्नत ने सय्यिदिना मौला अ़ली ﷺ मौलूदे का'बा होना ज़िक्र फ़रमाया है जिन में से चन्द एक के सिर्फ़ हवालाज़ात पेश किये जाते हैं :

99 इमाम अबी अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इश्हाक़ बिन अल अब्बास अल -मक्कीयुल फकिही (वफात सने - 272-हिजरी)

(फकिही फी अख़बार मक्का फी क़ादीमुल दहर व हदीषी जिल्द-03, सफा-32)

100 शैख अबी ज़करीया इब्न मुहम्मद बिन इयास बिन अल-क़ासिम अल अज़्दी (वफात सन 334 हिजरी)

(अज़्दी फी तारीखुल मौसिल, सफा-58)

101 क़ाज़ी अबूल शैख अबूल क़ासिम इस्माइल बिन अहमद अल बुस्ती (वफात सन 420 हिजरी)

(बुस्ती फी किताबुल मरातीब फी फज़ाइल अमीरुलमु'मिनीन व सय्यिदुल वासीयीन अ़ली इब्न अबी तालिब ﷺ, सफा-151)

102 अब्दुल मलिक बिन अल-क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अल-करदाबूस अल-तौज़ारी (वफात सन 575 हिजरी)

(इब्न करदाबूस फी अल इक्तिफा फी अख़बारुल खुलफा, जिल्द-01, सफा-480)

103 अल्लामा अबी हुरैरा अब्दुर्रहमान बिन अब्दुलसलाम अल सफूरी (वफात सन 894 हिजरी)

(सफूरी फी अल मुख़्तसरुल महासिनुल मुजतमा फी फज़ाइलुल खुल्फाउल अरबा, सफा-156)

104 **अल्लामा अश्शैख अलाउद्दीन अ़ली ददह बिन मुस्तफा शैखुल तुरबाउल बूस्नवी** (वफात सन 998 हिजरी)

(बुस्नवी फी अल-अवाइल व मुसामरातुल अवाखिर, सफा-79)

105 **शैख मुस्तफा इब्न कमालुद्दीन अल बकरी अल सिद्दीकी अल दिमश्क़ी** (वफात सन 1162 हिजरी)

(बाक़री फी अल दियाउस्समसी अला अल-फत्हुल कुदसी, शरह विर्दुल सहर लिल बाक़री, जिल्द-02 सफा-530)

106 **अल्लामा सय्यिद मुहम्मद शुक्री अल आलूसी** (वफात सन १३४२ हिजरी)

(आलूसी फी अस्सुयूफूल मुश्रिक़ा व मुख़्तसर सवाक़ीउल मुहर्रिक़ा लि अल्लामा अश्शैख नासिरुद्दीन, जिल्द-204)

औरतें अ़ली बिन अबी तालिब ﷺ की मिस्ल जनने से आजीज़ आ गई

- इस बात को तरजुमाने कुर्आन हज़रत सय्यिदिना इब्न अब्बास ﷺ ने यूं इरशाद फरमाया :

'औरतें अमीरुलमु'मिनीन सय्यिदिना अ़ली इब्न अबी तालिब ﷺ की मिस्ल पेश करने (जन्म देने) से बान्ज हो गई ।'

(इब्न असाकिर फी तारीख़ मदीनतुल दिमश्क़, जिल्द-42, सफा-460)

(इब्न मन्जूर फी मुख़्तसर तारीख़ दिमश्क़, जिल्द-18, सफा-49)

- अमीरुलमु'मिनीन सय्यिदिना उमर इब्न खत्ताब ﷺ ने फरमाया :

'औरतें अ़ली इब्न अबी तालिब ﷺ की मिस्ल जनने से आजिज़ आ गई; अगर अ़ली ﷺ ना होते तो उमर ﷺ हलाक़ हो जाता ।'

(इब्न सम्मान फी मुख़्तसर किताबुल मुवाफ़्क़ह बैन अहले बैत वस्साहाबा सफा-152)
(मुहिब्बुद्दीन तबरी फी रियाजुन्नाज़िरा फी मनाक़िबुल अशरा, जिल्द-04, सफा-139)
(मुहिब्बुद्दीन तबरी फी ज़ख़ाइरुल उक़्बा फी मनाक़िब ज़वीयुल क़ुरबा, सफा-99)
(सिब्त इब्न अल जौज़ी फी तज़्किरतुल खव्वास, अल मा'रुफ बि तज़्किरत खव्वासुल उम्मा फी खसाइसुल अइम्मा, सफा-12) (नदवी फी अल-मुर्तज़ा, सफा-129)

इख़्तेताम व दुआ

अल्लाह करीम अपने हबीबे करीम ﷺ के तुफ़ैल तमाम मुसलमानों को अह्ले बैते अत्हार عليهم السلام के ख़साइस व इम्तियाज़ात का इदराक नसीब फ़रमाये और ब-वजहे मज़्हबी त'आस्सुब उनके मक़ाम व मरतबा से रू-ग़रदान होने से मेहफ़ूज़ रखे.....आमीन, षुम्मा आमीन, बि-जाहि ता-हा व या'सिन ﷺ